3-4

Swami Ramanand

Saraswati

॥ श्रीः ॥

गोकुलदास संस्कृत ग्रन्थमाला

३७

दैवज्ञरामकृष्णविरचितः

प्रश्नचण्डेश्वरः

(१०८ श्लोकों में ज्योतिष के उत्कृष्ट प्रश्न)

सम्पादक एवं हिन्दीव्याख्याकार

आचार्य रामजन्म मिश्र

ज्योतिषशास्त्राचार्य (गणित-फलित), एम. ए. (हिन्दी),

प्रवक्ता, ज्योतिष विभाग, प्राच्य विद्या धर्म विज्ञान संकाय

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

चौखम्भा ओरियन्टालिया

प्राच्यविद्या तथा दुर्लभ ग्रन्थों के प्रकाशक एवं विक्रेता

वाराणसी दिल्ली

प्रकाशक

चौखम्भा ओरियन्टालिया

पो० आ० चौखम्भा, पो० बाक्स नं० ३२

गोकुल भवन, के. ३७/१०९, गोपाल मन्दिर लेन

वाराणसी–२२१००१ (भारत)

टेलीफोन : ५२९३९ टेलीग्राम : गोकुलोत्सव

शाखा—बंगलो रोड, ९ यू० बी० जवाहर नगर

दिल्ली–११०००७

प्रथम संस्करण १९७९

मूल्य रु० चौखम्भा ओरियन्टालिया

संशोधित मूल्य रु० 15/-

अन्य प्राप्तिस्थान

चौखम्भा विश्वभारती

पो० बाक्स नं० १३९

चौक (चित्रा सिनेमा के सामने)

वाराणसी

फोन : ६५४४४

GOKULDAS SANSKRIT SERIES

NO. 37

PRAŚNACAṆḌEŚVARA

OF

RĀMAKṚṢṆA

(Searching questions of Astrology in 108 Verses)

Editor and Commentator

ĀCĀRYA RĀMAJANMA MIŚRA

Jyotiṣa Śāstrācārya (Gaṇita & Phalita), M. A. (Hindi)

Leeturer, Deptt. of Jyotiṣa

Faculty of Oriental Learning & Theology

Banaras Hindu University

CHAUKHAMBHA ORIENTALIA

A House of Oriental and Antiquarian Books

VARANASI DELHI

Publishers

CHAUKHAMBHA ORIENTALIA

P. O. Chaukhambha, Post Box No. 32
Gokul Bhawan, K. 37/109, Gopal Mandir Lane
VARANASI-221001 (India)
Telephone : 52939 Telegram : Gokulotsav

Branch—Bungalow Road, 9 U. B. Jawahar Nagar,
DELHI-110007

First Edition 1979

~~Price Rs. 7-50~~

Printers—Vidya Vilas Press, Varanasi.

समर्पण

जिनके श्रीचरणों के सानिध्य से ज्योतिषशास्त्र का घण्टापथ
दृष्टिगोचर हुआ, उन्हीं निरवद्यविद्या यशःपूत
ज्योतिषमार्तण्ड पण्डितराज
आचार्यप्रवर
गुरुवर्य
स्वर्गीय श्री पण्डित
रामव्यास पाण्डेय जी
के चरणकमलों में यह लघु पुष्पाञ्जलि
सादर समर्पित है ।

श्रद्धावनत
रामजन्म मिश्र

प्राक्कथन

भारतीय जनजीवन का श्रेय मार्ग प्रदर्शक एक मात्र वेद ही है। "यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचिद्" के अनुसार इस वेद में सर्वस्व है इसे सभी भारतीय मानते आरहे हैं। 'ऋक्-यजुः सामाऽथर्व' भेद से ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद—ये चार वेद हैं, शिक्षा-कल्प-शब्द-ज्योतिष-निरुक्त-छन्द—ये षट् शास्त्र (वेदाङ्ग) तथा पुराण, न्याय-मीमांसा और धर्मशास्त्र—ये चार उपाङ्ग हैं। आचार्य श्री याज्ञवल्क्य ने इन्हीं १४ विद्याओं का निर्देश किया है एवं आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद और अर्थशास्त्र को लेकर कुल अष्टादश विद्यायें होती हैं।

इस चतुर्दश या अष्टादश विद्याओं में 'वेदस्य निर्मलं चक्षुः ज्योतिः शास्त्रमकल्मषम्' वेद का प्रमुख अंग नेत्र स्वरूप यह ज्योतिषशास्त्र है। इसके विना सभी कार्य चाहे वे श्रौत कार्य हों या स्मार्त कार्य हों अवरुद्ध रहते हैं 'चक्षुषांगेन हीनो न किञ्चित्करः'। आज के इस वैज्ञानिक युग में भी इसका महत्त्व बढ़ा है और समाज के मूर्धन्य व्यक्ति इसकी वैज्ञानिकता को सिद्ध कर उससे संसार को विशेष कुछ देना चाहते हैं।

ज्योतिष कल्पद्रुम के तीन प्रमुख स्कन्ध संहिता, होरा और सिद्धान्त हैं ये सभी अपना २ विशिष्ट स्थान आज भी संजोकर रक्खे हैं। संहितास्कन्ध के द्वादश भेदों में प्रश्न-ग्रन्थ समूहों का बड़ा महत्त्व है। ज्योतिष के जिज्ञासुओं की तुष्टि के लिए ये ग्रन्थ बड़े ही उपयोगी हैं। समय-समय पर आचार्यों ने अपनी अनुभूतियों को पिरोकर हजारों परीक्षणों के बाद जन-सेवा में लगाया है। आज प्रश्न के अनेक ग्रन्थ तथा यत्र तत्र बिखरे वाक्य भी श्रुतिसाक्ष्य में आते हैं और इन्हीं ग्रन्थों में प्रस्तुत प्रश्नचण्डेश्वर भी है।

'भारतीय ज्योतिष' शिवनाथ झारखण्डी, पृ० ६३८ में 'प्रश्ननारदी' और 'प्रश्नज्ञान' या 'प्रश्न समाप्ति' भट्टोत्पलकृत का नाम दिया गया है किन्तु प्रश्नचण्डेश्वर या रामकृष्ण दैवज्ञ के विषय में कुछ भी संकेत नहीं दिया है। इसी प्रकार 'भारतीय ज्योतिष' डा० नेमिचन्द्र शास्त्री, पृ० ५०८ में भी कहीं उल्लेख नहीं मिलता तथा डा० साहब के इतिहास के लेखन में प्रयुक्त ग्रन्थों की अनुक्रमणिका में केरलप्रश्नरत्न, केरलप्रश्नसंग्रह, केवलज्ञानप्रश्नचूड़ामणि, प्रश्नकुतूहल, प्रश्नोपनिषद्, प्रश्नकौमुदी, प्रश्नचिन्तामणि; प्रश्ननारदीय, प्रश्नवैष्णव, प्रश्नसिद्धान्त, प्रश्नसिन्धु का

नामोल्लेख तो है किन्तु इन महानुभावों के ऐतिहासिक विराट् कलेवर में कहीं प्रश्नचण्डेश्वर या दैवज्ञ रामकृष्ण के सम्बन्ध में कुछ देने की आवश्यकता प्रतीत नहीं हुई।

परमादरणीय आचार्य सुधाकर द्विवेदी जी ने अपनी गणकतरंगिणी में जो कुछ भी उल्लेख किया है उससे यह ज्ञात होता है कि जातकालङ्कार के प्रणेता गणेश दैवज्ञ के परिवार में रामकृष्ण का भी जन्म हुआ था। जातकालङ्कार के अन्त में जो श्लोक दिया गया है उससे यह ज्ञात होता है कि गणेश दैवज्ञ के भाई रामकृष्ण थे तथा ये गुजराती ब्राह्मण थे। गणकतरंगिणी या जातकालङ्कार को देख कर तज्जन्य जिज्ञासा की पूर्ति स्पष्ट है।

दैवज्ञ रामकृष्ण ने कुल सात अध्यायों में क्रमशः ५, ११, ९, १५, ५, २३ और ४० श्लोकों में पूरीमाला १०८ श्लोकों में गुंथी है और इन्होंने प्रायः सभी व्यावहारिक प्रश्नों का समावेश इस ग्रन्थ में किया है। इसके कुछ प्रश्न तो अन्य प्रश्न ग्रन्थों में आये हुए श्लोकों का अनुदित भाग ही जान पड़ता है जिसका उल्लेख यथास्थान टिप्पणी देकर प्रदर्शित कर दिया गया है। सात अध्यायों के अतिरिक्त एक प्रकीर्णकाध्याय भी इसमें जोड़ दिया गया है जिसमें कुछ तो ग्रन्थान्तरों का संग्रह है तथा कुछेक परम्परागत स्मृतियों से लिया गया है। प्रकीर्णकाध्याय का महत्त्व भी पाठकों को इसके अध्ययन से ज्ञात होगा। इसकी संरचना से जो लाभ की कामना है उसकी पूर्ति पाठकों के हाथों में है। मैंने इस अनुपलब्ध ग्रन्थ को उपलब्ध कराने का एक प्रयास मात्र किया है। यदि इसके द्वारा ज्योतिष जगत का कुछ लाभ हुआ तो मैं अपना श्रम सफल समझूँगा। मनुष्य बहुज्ञ हो सकता है सर्वज्ञ नहीं, अतः त्रुटियों का होना मानवगुण या धर्म या स्वभाव समझ कर पाठक क्षमा करेंगे; साथ ही मुझे पत्र द्वारा इस सम्बन्ध की सूचना देंगे जिससे अगले संस्करण में उसे दूर किया जा सके।

श्रीरामनवमी, वि० सं० २०३६
दिनांक ५–४–१९७९

रामजन्म मिश्र

टीकाकर्तुः परिचयः

विश्ववन्द्यान् महाप्राज्ञान् ज्योतिर्विद्याविशारदान् ।
आचार्यान् रामकृष्णाद्यान् भूयोभूयो नमाम्यहम् ॥ १ ॥
विद्यावतां बलवतां पुरुषार्थभृतां सताम् ।
आगारमुत्तरप्रान्ते भाति वलियामण्डलम् ॥ २ ॥
सिकर्यार्कपुरोत्तंसो वंशो गौतमगोत्रभृत् ।
'विगही' नामके ग्रामे गुणग्रामेऽत्र राजते ॥ ३ ॥
ग्रामेऽस्मिन् विश्रुतो विद्वान् नानाशास्त्रविचक्षणः ।
श्रीमान् गोकुलमिश्रोऽभूत् सर्वपूज्यो द्विजाग्रणीः ॥ ४ ॥
तस्याभवत् सुतो विज्ञः शिवगोविन्दसंज्ञकः ।
शिव-गोविन्दयोर्यस्मिन् सम्यगभ्युदिता गुणाः ॥ ५ ॥
स चोग्रतपसा प्रापत् पुत्रानभ्यर्चितान् जनैः ।
नन्दनश्रीकरान् पञ्च देवद्रुमवरानिव ॥ ६ ॥
क्रमेण श्रीदीनबन्धुं श्रीदेवशरणं ततः ।
प्राज्ञं श्रीगिरिजादत्तं मध्यं मणिमिव स्रजः ॥ ७ ॥
श्रीमत्कुबेरदत्ताख्यं चतुर्थं सम्मतं सताम् ।
पञ्चमं रुद्रदत्तेन नाम्ना ख्यातं महात्मसु ॥ ८ ॥
तत्र श्रीगिरिजादत्तमिश्रस्य पितुरन्तिकात् ।
मातरि श्रीनगेश्वर्यां रामजन्माभवत् सुतः ॥ ९ ॥
पूज्यश्रीमालवीयस्य विश्वविद्यालयेऽतुले ।
प्राज्ञपूजितपादेभ्य आचार्येभ्योऽधिकाशिकम् ॥ १० ॥
विन्ध्येश्वरीप्रसादेभ्यो रामव्यासेभ्य एव च ।
केदारदत्तजोशीभ्यो गुरुभ्योऽधिगतागमः ॥ ११ ॥
प्राध्यापकपदं प्राप्य विद्यालये स्थितः ।
छात्रानध्यापयन् प्रेम्णा तोषयंश्च सुधीश्वरान् ॥ १२ ॥
टीकां नवीनामारच्य विदुषां धुरि रक्षता ।
श्रीरामजन्ममिश्रोऽयं तुष्टिमात्मनि विन्दति ॥ १३ ॥
स्नेहामृतं विना येषां ग्रन्थलेखनवर्त्मनि ।
मरुप्राये गतिर्न स्यात्तान्नुमः प्रेरकान् बुधान् ॥ १४ ॥
प्रीयन्ते यदि सुप्रीता गुणदोषविदोविदः ।
तदैव श्रमसाफल्यं गणयिष्याम्यहं हृदा ॥ १५ ॥

विदुषामाश्रयो

रामजन्ममिश्रः

विषयानुक्रमणिका

॥ श्रीः ॥

भास्करो विजयते

प्रश्नचण्डेश्वरः

अथ प्रथमोऽध्यायः

गण्डस्थलीगलितमन्दमदप्रवाह-
माद्यद्विरेफमधुरस्वरदत्तकर्णः ।
हर्षादिवालसनिमीलितनेत्रयुग्मो
विघ्नच्छिदे भवतु भूतपतिर्गणेशः ॥ १ ॥

अन्वयः—गण्डस्थलीगलितमन्दमदप्रवाहमाद्यद्विरेफमधुरस्वरदत्तकर्णः हर्षादिवालसनिमीलितनेत्रयुग्मः, भूतपतिः गणेशः विघ्नच्छिदे भवतु ।

भाषा—कविजन विघ्न-विध्वंशनार्थ अपने-अपने इष्टदेव का स्मरण अपने ढंग से करते हैं और उन्हें उसी परम्परा में आनन्द आता है। वर्तमान ग्रन्थ में भी ग्रन्थकर्त्ता ने गणेशजी का स्मरण उनके विचित्र स्थितिकाल का किया है इसका कारण मात्र उनके एकाग्ररूप का स्मरण किया गया है। मतवाले गजों के मस्तक से मद निकलता है और उस पर भ्रमर भी लग जाते हैं। यह पहचान उत्तम कोटि के गजों की है।

हमारे विघ्नेश्वर गजानन हैं और इन्हें उत्तमोत्तम गजानन मान कर ही सम्भवतः इस प्रकार की कल्पना ग्रन्थकार ने की है।

गणेशजी की गण्डस्थली से मद का मन्द प्रवाह हो रहा है जिस पर बैठ कर भ्रमर गुंजार कर रहे हैं। उन भ्रमरों की ध्वनि को बड़ी एकाग्रता से प्रसन्न मन होकर अधखुली आँखों से युक्त सुनने के लिए गणेश जी कानों को आगे किए हुए हैं। यह जो गणपति, भूतनाथ, गजानन का स्वरूप है मेरा विघ्न दूर करे ॥ १ ॥

सत्वं रजस्तमश्चैव लाभप्रश्नस्तथैव च ।
भविष्यति कदा कार्यममुकं कार्यमेव च ॥ २ ॥
मूकप्रश्नोऽङ्कप्रश्नश्च नष्टमुष्टिक एव च ।
गमागमौ तथा यात्रा शीघ्रागमनमेव च ॥ ३ ॥

युद्धं सान्धी रिपुं हन्तुं दुर्गभङ्गस्तथैव च ।
विवाहः पुत्रप्रश्नश्च ज्ञेयं शुभमथाशुभम् ॥ ४ ॥
इन्द्रचापः परिवेषो मृगया भोजनं तथा ।
रविमध्ये चन्द्रवर्णो मित्रपक्षस्तथैव च ॥ ५ ॥

इति श्रीप्रश्नचण्डेश्वरे संज्ञाध्यायः प्रथमः ॥ १ ॥

अन्वयः—सूचीस्वरूपमति सुगमन् ।

भाषा—इन श्लोकों के द्वारा आगे वर्णित विषयों का संक्षेप में दिग्दर्शन कराया गया है । जो एक प्रकार से सूची का कार्य कर रहा है । सम्भवतः इसी लिए ग्रन्थ-कर्त्ता ने पृथक् सूची नहीं दी है ।

सत्व, रज और तम का ज्ञान तथा साधन, लाभ प्रश्न, अमुक कार्य कब होगा या कार्य कब होगा, मूक प्रश्न, अङ्क प्रश्न, नष्ट प्रश्न, मुष्टिक प्रश्न, गमनागमन प्रश्न, तथा यात्रा सम्वन्धी प्रश्न, शीघ्र आगमन प्रश्न, युद्ध प्रश्न, सन्धि प्रश्न, शत्रुनाश का प्रश्न, दुर्गभङ्ग का प्रश्न, विवाह प्रश्न, पुत्र सम्वन्धी प्रश्न, शुभ तथा अशुभ प्रश्न, इन्द्रचाप फल, परिवेष का फल, आखेट प्रश्न, भोजन सम्वन्धी प्रश्न, सूर्य के अन्दर चन्द्रादिकों का वर्ण तथा फल ज्ञान, मित्र पक्ष जन्य प्रश्नादि विषयों का वर्णन क्रमशः आगे किया गया है ॥ २–५ ॥

अथ द्वितीयोऽध्यायः

सत्वरजस्तमोवेलाफलम्—

यामार्द्धं चन्द्रसंयुक्तं तिथिवारसमन्वितम् ।
त्रिभिश्चैव हरेद्भागं शेषं सत्वं रजस्तमः[1] ॥ १ ॥
सत्वे शीघ्रं फलं वाच्यं रजोवेलासु मध्यमम् ।
तमसा निष्फलं कार्य्यं शारदावचनं यथा[2] ॥ २ ॥

अन्वयः—यामार्द्धम् (प्रहरार्द्धम्) तिथिः, वारसमन्वितम्, चन्द्रसंयुक्तम् । त्रिभिश्च एव हरेत् , शेषम् भागम् (क्रमेण) सत्वम्, रजः, तमः (इति बोध्यम्) । सत्वे शीघ्रम् फलम् वाच्यम् । रजः वेलासु मध्यमम् । तमसा (तमोवेलासु) कार्यम् निष्फलम् यथा शारदावचनम् (वाच्यम्) ।

१. तिथिः प्रहरसंयुक्ता तारकावारमिश्रिता ।
वह्निभिस्तु हरेद्भागं शेषं सत्वं रजस्तमः ॥
२. सिद्धिस्तात्कालिकी सत्वे रजसा तु विलम्बतः ।
तमसा निष्फलं कार्यं ज्ञातव्यं प्रश्नकोविदैः ॥

भाषा—यामार्द्ध (प्रहर का आधा) चन्द्रमा, (जिस राशि का चन्द्रमा हो वह मेषादिराशि) तिथि, वार इन सबका योग कर तीन से भाग देने पर १ शेष में सत्व, २ शेष बचे तो रज तथा ३ या शून्य शेष बचे तो तम होता है। इसका फल यह है कि यदि प्रश्न काल में सत्व वेला हो तो कार्य शीघ्र पूर्ण होगा। रजवेला हो तो कालान्तर में कार्य सिद्धि कहे तथा तमवेला प्राप्त होने पर कार्य सिद्ध नहीं होगा, ऐसा कहना चाहिए ॥ २–३ ॥

उदाहरण:—सं० २०३४ पौष शुक्ल ७ रविवार को दिन में १० बजे किसी ने प्रश्न किया। उस दिन सूर्योदय ६।४५ तथा चन्द्रमा मीनराशि पर है। सूर्योदय से १ घंटा १५ मिनट पर प्रश्न है अतः प्रथमयामार्ध (दिन में ४ और रात्रि में चार कुल ८ याम होते हैं जो प्रत्येक लगभग ३ घंटे के बराबर होता है अतएव यामार्ध १ घंटा ३० मिनट के बराबर होता है। दिनमान का अष्टमांश तथा रात्रि मान का अष्टमांश ला कर यामार्ध का ठीक-ठीक ज्ञान करना चाहिए) हुआ। चन्द्रमा की राशि मीन = १२ हुई, तिथि सप्तमी=७, वार रविवार = १ इनका योग (३ + १२ + ७ + १) = २३ हुआ इसमें ३ का भाग दिया २३ ÷ ३ = ७ लब्धि और शेष २ आया अतः रजवेला सिद्ध हुई इसमें कार्य विलम्ब से होगा, ऐसा कहना चाहिए।

लाभप्रश्नः[१]—

शीतांशुलग्नेश्वरवित्तनाथाः परस्परं संयुतवीक्षिताश्च।
धनत्रिकोणोदयगा यदा स्युस्तदार्थलाभं प्रवदेन्नराणाम् ॥ ३ ॥
लग्नलाभपती लग्ने लाभे वा लग्नलाभपौ।
लग्ने लाभाधिपो वापि लाभे लग्नाधिपो भवेत् ॥ ४ ॥
एकोऽपीह यदायोगस्तदालाभं सुनिश्चितम्।
चन्द्रयोगे विशेषेण लाभः स्वामिस्वरूपतः ॥ ५ ॥

अन्वयः—शीतांशुः, लग्नेश्वरः वित्तनाथाः परस्परं संयुताः वीक्षिता वा चेत् धन-त्रिकोणउदयगास्युः यदा तदा नराणां (लाभप्रश्ने) लाभं प्रवदेत्। लग्न-लाभपती लग्ने। लग्नलाभपौ लाभे। लाभाधिपो लग्ने, वा लग्नाधिपो लाभे भवेत्। इह यदा एकोऽपि योगस्तदा सुनिश्चितं लाभं वदेत्। चन्द्रयोगे स्वामि-स्वरूपतः विशेषेण लाभः।

---

१. भुवनप्रदीपे—
लग्नपति यदि लग्नं कार्याधिपतिश्च वीक्षते कार्यम्।
लग्नाधीशः कार्यं कार्येशः पश्यति विलग्नम् ॥ ३ ॥
लग्नेशः कार्येशं विलोकयेल्लग्नपं तु कार्येशः।
शीतगुदृष्टौ सत्यां परिपूर्णा कार्यसंसिद्धिः ॥ ४ ॥

भाषा—चन्द्रमा लग्नेश और धनेश परस्पर संयुक्त हों अथवा वीक्षित हों और धन भाव में त्रिकोण (६,५) में तथा लग्न में स्थित हों तो अर्थ का लाभ होगा, ऐसा कहना चाहिए। १–लग्नेश और लाभेश दोनों लग्न में हों, या २–लग्नेश और लाभेश दोनों लाभ स्थान में हों, या ३–लाभेश लग्न में हों, या ४–लग्नेश लाभस्थान में हो, अर्थात् उपरोक्त कोई भी योग यदि प्रश्नलग्नचक्र में हो तो अवश्य ही धन का लाभ होता है। विशेष कर यदि चन्द्रमा योग करता हो तो लग्नेश के स्वरूप के अनुसार अवश्य ही लाभ होता है॥ ३–५॥

ग्रहों की दृष्टि, उनके स्वामी दिशा आदि का ज्ञान चक्र द्वारा सरलता से किया जा सकता है।

ग्रहाणां दृष्ट्यादिज्ञानाय चक्रम्

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	ग्रहाः
७	७	४।८	७	९।५	७	३।१०	३।१०	पूर्ण-दृष्टिः
३ १०	३ १०	७	३ १०	४ ८	३ १०	५ ९	५ ९	त्रिपाद दृष्टिः
९ ५	९ ५	३ १०	९ ५	७	९ ५	८ ४	८ ४	अर्द्ध-दृष्टिः
८ ४	८ ४	५ ९	८ ४	३ १०	८ ४	७	७	पाद-दृष्टिः
५	४	१।८	३।६	९।१२	२।७	१०।११	६	राशयः
ताम्र	श्वेत	अति-रक्त	हरित	पीत	चित्र	कृष्ण	कृष्ण	वर्णाः
अग्नि	जल	कुमार	विष्णु	इन्द्र	इन्द्राणी	ब्रह्मा	—	स्वा-मिनः
पूर्व	वायु०	दक्षिण	उत्तर	ईशान	अग्नि०	पश्चिम	नैऋत्य	दिशाः
—	—	अग्नि	भूमि	आकाश	जल	वायु	—	तत्व.
पुं०	स्त्री.	पुं.	नपुं०	पुं.	स्त्री.	नपुं.	—	स्त्री. पुं.
क्ष०	वै.	क्ष.	शूद्र	ब्रा.	ब्रा.	चांडाल	—	वर्णः
सत्व	सत्व	तमो.	रजो.	सत्व	रजो.	तमो.	—	सत्व-रजतम.

लग्नलाभपयोर्दृष्टिर्लाभे लाभकरी मता ।
लाभः सर्वखगैर्दृष्टो लाभः पूर्णो भवेत्तदा ॥ ६ ॥
लग्नेशो यदि धर्मेशः शुभदृष्टियुतोऽपि वा ।
लग्नपो वा त्रिकोणस्थश्चन्द्रर्क्षे क्षेमकारकः ॥ ७ ॥

अन्वयः—लाभे लग्नलाभपयोर्दृष्टिः लाभकरी मता । सर्वखगैर्दृष्टः लाभः तदा पूर्णो लाभः भवेत् । लग्नेशः धर्मेशो वा यदि शुभदृष्टियुतः अपि वा लग्नपः चन्द्रर्क्षे त्रिकोणस्थः तदा क्षेमकारकः (अनायासेन धनादि प्राप्तिः) ।

भाषा—दृष्टि के द्वारा लाभ का निरूपण करते हुए कहते हैं कि लग्नेश और लाभेश की पूर्णदृष्टि यदि लाभस्थान पर हो तो लाभ होता है और यदि लाभ स्थान को सभी शुभग्रह पूर्णदृष्टि से देखते हों तो भी उत्तम लाभ होता है । लग्नेश और धर्मेश यदि शुभग्रहों से देखा जाता हो अथवा लग्नेश कर्कराशि का होकर नवम या पंचम स्थान में बैठा हो तो लाभकारक होता है ॥ ६–७ ॥

चरे दूरं विजानीयात् स्थिरे लाभश्च[1] मंदिरे ।
द्विस्वभावे द्विलाभः स्याद् ग्रहयोगवशात्पुनः ॥ ८ ॥
चन्द्रो लग्नपतिर्वापि धनस्थानगतो यदि ।
तदा तु धनलाभः स्याद्विपरीतो ह्यलाभकृत ॥ ९ ॥

अन्वयः—चरे चरराशौ (१, ४, ७, १०) यदा लग्नस्तदा दूरं विजानीयात् । स्थिरे च मन्दिरे (एव) लाभः । द्विस्वभावे द्विलाभः (उभयतः) स्यात् । पुनः ग्रहयोगवशात् विशेषेण वाच्यो यदि चन्द्रः लग्नपतिर्वा धनस्थानगतः तदा तु धनलाभः स्यात् । विपरीतः अलाभकृत्, भवेत् ।

भाषा—यदि प्रश्नकालिक लग्न चरराशि (१, ४, ७, १०) हो तो बाहर से या दूर स्थान से धन का लाभ होता है । स्थिर राशि हो (२, ५, ८, ११) तो गृह से ही या घर बैठे ही अनायास लाभ होता है और द्विस्वभाव राशि लग्न में (३,६,९,१२) होने से दूर तथा समीप दोनों ही प्रकार से धन लाभ होता है । चन्द्रमा या लग्नेश यदि धन स्थान (द्वितीय) में बैठे हों तो निश्चय धनादि का लाभ होता है । विपरीत ग्रह स्थिति में विपरीत फल का निर्देश करना चाहिए ॥ ८–९ ॥

धने धनपतिर्लग्ने वित्तपोधनलाभकृत् ।
धने शुक्रेन्दुगुरवो धनेशसहिता यदि ॥ १० ॥

---

१. स्थिरोदये स्थिरांशे वा वर्गोत्तमगतेऽपि वा ।
स्थितं तत्रैव तद् द्रव्यं स्वकीये नैव चोरितम् ॥ षट्पञ्चाशिका ।

लग्ने लाभेशसंदृष्टे लाभे शुक्रो गुरुर्विधुः।
लाभो भवति भाग्ये वा धने वा चन्द्रयोगतः ॥ ११ ॥

इति श्रीप्रश्नचण्डेश्वरे लाभालाभाध्यायो द्वितीयः ॥ २ ॥

अन्वयः—धनपतिः धने, वित्तपः लग्ने धनलाभकृत्, (भवेत्)। यदि धनेशसहिता शुक्रेन्दुगुरवः धने (तदाऽपि धनलाभो भविष्यति)। लाभेशसंदृष्टे लग्ने लाभे, भाग्ये वा धने शुक्रः गुरुः विधुः वा (तदा) चन्द्रयोगतः लाभो भवति।

भाषा—धनभाव का अधिपति धनस्थान में बैठा हो तथा धनेशलाभ में हो, लाभकारी होता है अथवा धनस्थान में शुक्र, चन्द्रमा और गुरु धनेश के साथ बैठे हों तो लाभ होता है। अथवा लाभेश लग्न को देखता हो तथा शुक्र, गुरु और चन्द्रमा लाभ, नवम (भाग्य) और धनस्थान में चन्द्रमा से योग करते हों तो अर्थ का लाभ अवश्य होता है ॥ १०–११ ॥

अथ तृतीयोऽध्यायः

मम कार्यं कदा भविष्यतीतिप्रश्ने—

पश्येद्विलग्नं यदि लग्ननाथः कार्याधिपः कार्यगृहं प्रपश्येत्।
कार्येश्वरं लग्नपतिस्तनूपं कार्येश्वरं सिद्धिमुपैति कार्यम् ॥ १ ॥

अन्वयः—यदि लग्ननाथः विलग्नं पश्येत्। कार्याधिपः कार्यगृहं प्रपश्येत्। लग्नपतिः कार्येश्वरं, तथा तनूपं (लग्नेश्वरं) कार्येश्वरः पश्यति तदा कार्यं सिद्धिमुपैति।

भाषा—लग्नेश लग्न को देखता हो, तथा कार्येश कार्यगृह को देखता हो। लग्नपति कार्यपति को तथा कार्यपति लग्नपति को देखता हो तो शीघ्र ही कार्य की सिद्धि होती है ॥ १ ॥

मूकप्रश्नविचारः—

इष्टमङ्कं द्विगुणितमेकेन सह संयुतम्।
त्रिभिश्चैव हरेद्भागं शेषं च फलमादिशेत् ॥ २ ॥
विषमाङ्के जीवचिन्ता समे धातोः प्रकीर्तिता।
शून्ये मूलं विजानीयाच्छारदावचनं यथा ॥ ३ ॥

अन्वयः—इष्टम् अङ्कं (सूर्योदयादिष्टघट्यात्मको अङ्कः) द्विगुणितम्, एकेन सह संयुतम्, त्रिभिः च एव हरेत् शेषं भागं च फलम् आदिशेत् ॥ २ ॥ विषमाङ्के जीवचिन्ता, समे धातोः (चिन्ता) प्रकीर्तिता, शून्ये च मूलं विजानीयात् यथा शारदावचनम्।

भाषा—प्रश्न समय कालिक इष्टकाल का आनयन कर जो घट्यादिमान आवे उसमें एक जोड़कर ३ का भाग देने से १ शेष में जीवचिन्ता, दो शेष में धातुचिन्ता तथा ०,३ शेष में मूल चिन्ता प्रश्न कर्त्ता के मन में है ऐसा समझना चाहिए (कीट पतंगादि से मनुष्य तक जीव, मृत्तिका से माणिक्यादि पर्यन्त धातु और तृण से लेकर वृक्षादि तक मूल में आते हैं) ॥ २–३ ॥

व्योमदृष्टिर्भवेज्जीवो मूलं भूम्यवलोकनम् ।
समावलोकने धातुर्ज्ञेयं केवलदृष्टितः ॥ ४ ॥

अन्वयः—व्योमदृष्टिः जीवः, भूम्यवलोकनम् मूलं, समावलोकने धातुः ज्ञेयम् । (जीवमूल-धातुज्ञानं) केवलं दृष्टितः भवेद ।

भाषा—जीव, मूल, और धातु का ज्ञान केवल दृष्टि से होता है। यथा-प्रश्नकर्त्ता प्रश्न के समय आकाश देखे तो जीव सम्बन्धी प्रश्न, भूमि देखे तो मूल सम्बन्धी प्रश्न तथा समान दृष्टि से धातु सम्बन्धी प्रश्न उसके मन में है, ऐसा समझना चाहिए ॥ ४ ॥

पूर्वस्यां धातुचिन्ता स्याज्जीवं दक्षिणतस्तथा ।
उत्तरस्यां वदेन्मूलं पश्चिमे मिश्रितं फलम् ॥ ५ ॥
शिरःस्पर्शे तु जीवः स्यात्पादस्पर्शे तु मूलकम् ।
धातुश्च मध्यमस्पर्शे शारदावचनं यथा ॥ ६ ॥

अन्वयः—पूर्वस्यां धातुचिन्ता तथा दक्षिणतः जीवं स्याद । उत्तरस्यां मूलं, पश्चिमे मिश्रितं फलं वदेद । एवम् शिरः स्पर्शे तु जीवः पादस्पर्शे तु मूलकम्, मध्यमस्पर्शे धातुश्च स्यात् यथा शारदावचनमिति शेषः ।

भाषा—प्रश्न काल में यदि प्रश्नकर्त्ता पूरब मुख हो तो धातुचिन्ता, दक्षिण मुख हो तो जीवचिन्ता, उत्तर मुख हो तो मूल चिन्ता तथा पश्चिम मुख हो तो मिश्रित चिन्ता उसके मन में समझना चाहिए। शरीर स्पर्श के आधार पर शिर का स्पर्श करे तो जीव चिन्ता, पैर का स्पर्श करे तो मूल की चिन्ता और कटि भाग का स्पर्श करे तो धातु की चिन्ता उसके मन में है ऐसा शारदा वचन प्रमाण से दैवज्ञ को समझना चाहिए ॥ ५–६ ॥

बाहुवक्त्रशिरः स्पर्शे जीवचिन्ता शुभावहा ।
हृदयोदरसंस्पर्शे धातुचिन्ता तु मध्यमा ॥ ७ ॥
गुदवृषणसंस्पर्शे चाधमं मूलचिन्तनम् ।

जानुजंघापदस्पर्शे जीवचिन्तां विनिर्दिशेत्[1] ॥ ८ ॥

अन्वयः—बाहुः वक्त्रं, शिरः स्पर्शे शुभावहा जीवचिन्ता । हृदय-उदर-संस्पर्शे तु मध्यमा धातुचिन्ता । गुदं, वृषणं, संस्पर्शे च अधमं मूलचिन्तनम् । एवम् जानु-जंघा-पद-स्पर्शे जीवचिन्तां विनिर्दिशेत् ।

भाषा—दोनों भुजायें, मुख तथा शिर का स्पर्श शुभ दायक जीव चिन्ता का द्योतक है । हृदय और उदर का स्पर्श मध्यम धातु चिन्ता का बोधक है । गुदा (शौचेन्द्रिय तथा वृषण अण्डकोष) का स्पर्श अधम मूल चिन्ता का ज्ञान कराता तथा जानु जंघा और पद स्पर्श से भी जीव चिन्ता का निर्देश होता है ॥ ७—८ ॥

न दृश्यतेऽष्टद्वितये च कार्यं रसैः समुद्रैर्निजकार्यसिद्धिः ।
सप्तत्रयोऽङ्काः कथयन्ति धैर्यं नवैकपंचत्वरितं ददन्ते ॥९॥

इति श्रीप्रश्नचण्डेश्वरे कार्यप्रश्नाध्यायः तृतीयः ॥ ३ ॥

अन्वयः—अष्टद्वितये च कार्यं न दृश्यते न स्यादित्यर्थः । रसैः ६ समुद्रैः ४ निजकार्यं सिद्धिर्वाच्या । सप्त ७ त्रय ३ विलम्बेन कार्यं सिद्ध्यति तथा नव ९ एकः १ पंच ५ स्थाने गताऽङ्गुलिः शीघ्रमेव कार्यं सूचयति ।

३	२	१
४	५	६
९	८	७

भाषा—निर्दिष्ट चक्र के अङ्कों का स्पर्श प्रश्न-कर्त्ता द्वारा अपने इष्टदेव का स्मरण कराकर कराना चाहिए । स्पर्श करनेवाला प्र श्न कर्त्ता यदि चक्रान्तर्गत ८ या २ का स्पर्श करता है तो कार्य नहीं होगा । ६ और ४ का स्पर्श करता है तो कार्य होगा । ७ और ३ का स्पर्श करता है तो कार्य विलम्ब से सिद्ध होगा, धैर्य धारण करे, तथा ९, ५ और १ का स्पर्श करे तो शीघ्र कार्य सिद्ध होगा ऐसा बतलाना चाहिए ॥ ९ ॥

---

१. इससे पूर्व श्लोकसंख्या ६ में आचार्य 'पादस्पर्शे तु मूलकम्' कह चुके हैं और इस श्लोक में तुरन्त ही 'जानुजंघापदस्पर्शे जीवचिन्ता विनिर्दिशेत्' कह रहे हैं । इससे दोषापत्ति हो रही है । अतएव यदि एकसाथ जानुजंघा और पद का स्पर्श करे तो जीवचिन्ता उसके मन में है, ऐसा निर्देश दैवज्ञ को करना चाहिए ।

अथ चतुर्थोऽध्यायः

नष्टवस्तुप्रश्नः—

लग्नत्रिकर्मात्मजमित्रधर्मलाभार्थगैः सौम्यखगैर्बलान्वितैः ।
केन्द्रत्रिकोणाष्टमलाभवर्ज्यैः पापैर्भवेन्नष्टधनस्य लाभः[1] ॥१॥

अन्वयः—लग्न, त्रि (तृतीयः) कर्म, आत्मजः (पंचमः) धर्मः, लाभः, अर्थः, (ऐषु स्थानेषु) गैः (गतैः) बलान्वितैः सौम्यखगैः तथा केन्द्र-त्रिकोण-अष्टम-लाभ-वर्ज्यैः पापैः यदा स्यात्तदा नष्टस्य धनस्य लाभः इति वाच्यः ।

भाषा—लग्न, तृतीय, कर्म, पंचम, चतुर्थ, नवम, एकादश और द्वितीय स्थान में बलयुक्त शुभग्रह बैठे हों तथा केन्द्र (१, ४, ७, १०) त्रिकोण (९, ५) अष्टम और एकादश स्थान में पापग्रह न हों तो नष्ट धन का लाभ होता है ॥ १ ॥

प्रसंगात् ग्रहाणां मित्रसमारिनीचोच्चत्रिकोणभवनादि बोधकचक्रम्—

सूर्यः	चन्द्रः	भौमः	बुधः	जीवः	शुक्रः	शनिः	ग्रहाः
चं. मं. गु.	सू. बु.	बृ. चं. सू.	सू. शु.	मं. सू. च.	बु. श.	शु. बु.	मित्राणि
बुधः	मं. बृ. शु. श.	शु. श.	मं. बृ. श.	शनिः	मं. बृ.	गुरुः	समाः
श. शु.	×	बुधः	चन्द्रः	बु. शु.	सू. च.	सू. मं. चं.	शत्रवः
मेष १०	वृष ३	मकर २८	कन्या १५	कर्क ५	मीन २७	तुला २०	उच्चराश्यंशाः
तुला १०	वृश्चिक ३	कर्क २८	मीन १५	मकर ५	कन्या २७	मेष २०	नीचराश्यंशाः
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	त्रिकोण-भवनानि

१. स्थिरोदये स्थिरांशे वा वर्गोत्तमगतेऽपि वा ।
स्थितं तत्रैव तद्द्रव्यं स्वकीयेनैव चोरितम् ॥

केन्द्रत्रिकोणाष्टमवित्तसंस्थैः　　　　पापग्रहैश्चाशुभवीक्षितैश्च ।
सौम्यैरमिश्रैः खलु वित्तनष्टिर्नाशोभवेदन्यधनस्य चापि ॥२॥

अन्वयः—केन्द्र १, ४, ७, १० त्रिकोण ९, ५ अष्टम ८ वित्त २ संस्थैः पापग्रहैः च अशुभविक्षितैः सौम्यैः अमिश्रैः खलु वित्तनष्टिः अन्यधनस्यापि च नाशो भवेत् ।

भाषा—केन्द्र १, ४, ७, १० त्रिकोण ९, ५ अष्टम ८ और धन २ स्थान में पापग्रह बैठे हों तथा उन्हें पापग्रह देखते हों और शुभग्रहों का दृष्टि-सम्बन्ध न हो, तो गया हुआ धन नहीं मिलता, साथ ही शेष धन की भी हानि होती है ॥

यस्मिन् राशौ भवेच्चन्द्रस्तद्राशेरधिपेन चेत् ।
दृश्यते चन्द्रमाः प्रश्ने तदा नष्टं च लभ्यते ॥ ३ ॥
चन्द्रो यदि भवेल्लग्ने तदा पूर्वगतं भवेत् ।
दशमस्थानगे चन्द्रे तदा नष्टं च दक्षिणे ॥ ४ ॥
सप्तमे च भवेच्चन्द्रस्तदा वित्तं च पश्चिमे ।
चतुर्थे च भवेच्चन्द्रस्तदा सौम्यादिगुच्यते ॥ ५ ॥

अन्वयः—प्रश्ने यस्मिन् राशौ चन्द्रः भवेत् तद्राशेरधिपेन चेद् चन्द्रमा दृश्यते तदा च नष्टं लभ्यते । (चन्द्रवशात् दिग्ज्ञानमाहः—) यदि चन्द्रः लग्ने भवेत् तदा पूर्वगतं (धनं) भवेत् । दशमस्थानगे चन्द्रे तदा च दक्षिणे नष्टं (भवेत्) । चन्द्रः सप्तमे भवेत् तदा च पश्चिमे वित्तम् । चतुर्थे चन्द्रः भवेत् तदा च उत्तरस्यां दिशि गतं धनं ज्ञेयमिति ।

भाषा—प्रश्न कालिक लग्न चक्र में चन्द्रमा जिस राशि में बैठा हो उसका अधिपति ग्रह यदि चन्द्रमा को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो नष्ट धन की प्राप्ति शीघ्र होती है । अब चन्द्रमा के आधार पर दिशा का ज्ञान कराते हुए बताते हैं कि यदि चन्द्रमा लग्न में हो तो पूर्व दिशा में नष्ट धन गया है । दशम स्थान में चन्द्रमा हो तो नष्ट धन दक्षिण, सप्तम स्थान में चन्द्रमा हो तो पश्चिम और चतुर्थ स्थान में चन्द्रमा हो तो उत्तर दिशा में नष्ट धन गया है, ऐसा जानना चाहिए ॥ ३–५ ॥

लग्नाच्चन्द्रो भवेद्यत्र तत्र चौरगृहं भवेत् ।
ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रो वा स्वजनोऽङ्गना ॥ ६ ॥
भ्राता पुत्रश्च स्नुषास्यान्मू पेको भृतकश्च भूः ।
मेषादिषु क्रमाच्चौरं नामेशाद्राशितुल्यकम् ॥ ७ ॥

आदिमध्यावसानेषु द्रेष्काणेषु विलग्नतः ।
द्वारदेशे तथा मध्ये गृहान्ते च वदेद्धनम् ॥ षट्पञ्चाशिकायाम् ।

अन्वयः—लग्नाच्चन्द्रो यत्र भवेत् तत्र चौरगृहं भवेत् । मेषादिषु (प्रश्नलग्नेषु) क्रमात् ब्राह्मणः क्षत्रियः, वैश्यः, शूद्रः, स्वजनः (बान्धवः), अङ्गना, भ्राता, पुत्रश्च, स्नुषा (पुत्रवधूः) स्यात् मूषिकः, भृत्यः भूश्चेति । राशितुल्यकं नाम च बोध्यम् ।

भाषा— प्रश्न लग्न से चन्द्रमा जिस भाव में बैठा हो उस राशि के अधिपति ग्रह की दिशा में चोर का गृह समझना चाहिए तथा मेषादि प्रश्न लग्नों के अनुसार ब्राह्मणादि को चोर समझना चाहिए । जैसे प्रश्न लग्न मेष हो तो चोर कोई ब्राह्मण है जो चोरी किया है । इसी प्रकार वृषलग्न में क्षत्रिय, मिथुन में वैश्य, कर्क में शूद्र, सिंह में अपने बान्धव (कुटुम्बीजन), कन्या में अपनी स्त्री, तुला में भाई, वृश्चिक में पुत्र, धनु में स्नुषा (पुत्रवधू), मकर में मूषक, कुम्भ में भृत्य तथा मीनलग्न में भूमि को चोर समझना चाहिए । राशि के अनुसार ही नाम भी जानना चाहिए ॥६–७॥

अन्धमन्दाक्षसंमध्यलोचनं च सुलोचनम् ।
गणयेद्रोहिणी पूर्वं सप्तवारमनुक्रमात्[1] ॥ ८ ॥
अंधे च लभते शीघ्रं काणे चैव दिनत्रये ।
चिपिटे मासमेकं स्याद्दिव्यदृष्टौ न लभ्यते[2] ॥ ९ ॥

अन्वयः—अन्ध, मन्दाक्ष, संमध्यलोचनं सुलोचनं च सप्तवारं अनुक्रमात् रोहिणी पूर्वं गणयेत् । अंधे च शीघ्रं लभते, काणे च दिनत्रये एव, चिपिटे मासमेकं स्यात्, दिव्यदृष्टौ (नष्टवस्तु) न लभ्यते ।

भाषा—अन्धनक्षत्र, मन्दाक्षनक्षत्र, संमध्यनक्षत्र और सुलोचननक्षत्र इनकी गणना क्रमशः रोहिणी आदि से अनुक्रम विधि से आरम्भ कर गणना करें । (कोष्ठक दर्शन से यह स्पष्ट होगा) और अन्ध से शीघ्रलाभ, काण में तीन दिन के बाद, मध्यनेत्र में श्रवण मात्र लाभ, तथा सुलोचन में अलाभ होता है ॥ ८–९ ॥

---

१. अन्धाक्षं वसुपुष्यधातृजलभद्वीशार्यमान्त्याभिधं
मन्दाक्षं रविविश्वमैत्रजलपाश्लेषाश्विचान्द्रं भवेत् ।
मध्याक्षं शिवपित्रजैकचरणत्वाष्ट्रेन्दुविध्यन्तकं
स्वक्षं स्वात्यदितिश्रवोदहनमाहिर्बुध्न्यरक्षोभमम् ॥ २२ ॥
मुहूर्तचिन्तामणि-नक्षत्रप्रकरणम् ।

अन्धकमथ मन्दाक्षं मध्यमसंज्ञं सुलोचनं पश्चात् ।
पर्यायेण च गणयेच्चतुर्विधं ब्रह्मधिष्ण्यातः ॥
पी. धा. टी. मु. चि. (वशिष्ठः)

२. लाभोऽन्धके निकट एव हृतस्य चोरैर्द्रव्यस्य लब्धिरिह के करभे प्रयत्नात् ।
दूरश्रुतिश्चिपिटभेषु कथंचिदेव न प्राप्ति उत्तमविलोचनभे कदाचित् ॥
रत्नमालायाम्

अन्ध-मन्दादि लक्षणज्ञानार्थं चक्रम्

रोहिणी ४	मृगशिर्ष ५	आर्द्रा ६	पुनर्वसु ७
पुष्य ८	अश्लेषा ९	मघा १०	पूर्वा फा० ११
उत्तराफा. १२	हस्त १३	चित्रा १४	स्वाती १५
विशाखा १६	अनुराधा १७	ज्येष्ठा १८	मूल १९
पूर्वाषाढ़ा २०	उत्तराषाढ़ा २१	अभिजित २२	श्रवण २३
धनिष्ठा २४	शतभिषा २५	पूर्वाभा. प. २३	उ. भा. प. २७
रेवती २८	अश्विनी १	भरणी २	कृत्तिका ३
अन्ध लोचन	मंद लोचन	मध्य लोचन	सुलोचन
शीघ्र लाभ	३ दिन में लाभ	श्रवण मात्र लाभ	अलाभ

वस्त्वक्षरगुणयोगस्त्रियुतः पञ्चहृतस्तथा ।
एकेन स्वगृहे ज्ञेयं द्वितीयेन बहिस्तथा[1] ॥ १० ॥

---

१. तिथिवारं च नक्षत्रं प्रहरेण समन्वितम् ।
दिग् संख्यया हृतं चैव सप्तभिर्विभजेत्पुनः ॥
एकेन भूतले द्रव्यं द्वयं चेद्‌भाण्डसंस्थितम् ।
त्रिभिस्तु जलमध्यस्थमन्तरिक्षे चतुर्थके ॥
तुषस्थं पञ्चमे तु स्यात् षष्ठे गोमयमध्यगम् ।
सप्तमे भस्ममध्यस्थमित्येतत्प्रश्नलक्षणम् ॥

तृतीये शयनागारे चतुर्थे स्थानसन्निधौ ।
पञ्चमे च विनोदेन हृतस्तेनैव बुध्यताम् ॥ ११ ॥

अन्वयः—हृत वस्त्वक्षरगुणयोगः त्रियुतः तथा पञ्चहृतः तदा शेषविधौ एकेन स्वगृहं ज्ञेयं । तथा द्वितीयेन बहिः ज्ञेयं । तृतीयेन शयनागरे, चतुर्थे स्थानसन्निधौ, पञ्चमे च तेनैव विनोदेन हृतः इति बुध्यताम् ।

भाषा—भूली हुई वस्तुओं के नामाक्षरों की गणना कर उसमें ३ जोड़कर ५ का भाग देने पर यदि लब्धि १ बचे तो वस्तु गृह में ही है । २ शेष बचे तो हृतवस्तु घर से बाहर जा चुकी है । तीन शेष बचे तो शयनागार में नष्ट वस्तु है तथा ५ शेष बचे तो विनोदार्थ (हंसी में) वस्तु को छिपा दिया गया है ऐसा कहना चाहिए ॥ १०–११ ॥

चरे दूरं विजानीयात्स्थिरे गृहगतं भवेत् ।
द्विस्वभावे वदेद्बाह्यं लग्नात् त्रिविधमादिशेत् ॥ १२ ॥
अग्निभान्मध्यतो लेख्यं पूर्वादिषु त्रिकं त्रिकम् ।
यस्यां च तस्य नक्षत्रं तस्यां नष्टधनं भवेत् ॥ १३ ॥
चन्द्रभादग्निपर्यन्तं गणनीयं भमण्डलम् ।
त्रिकं त्रिकं मध्यमं स्यादग्नि भे मार्ग उच्यते ॥ १४ ॥

अन्वयः—नष्टवस्तु चरे चरलग्ने दूरं विजानीयात् । स्थिरे च गृहगतं भवेत् । द्विस्वभावे वाह्यं वदेत् । अनेन प्रकारेण लग्नात् त्रिविधं आदिशेत् । मध्यतः पूर्वादिषु अग्निभात् त्रिकं त्रिकं (नक्षत्रं) लिखेत् । तस्य नक्षत्रं यस्यां दिशि वर्तते तस्यां दिशि नष्टधनं भवेत् । अथवा चन्द्रभात् अग्निपर्यन्तं भमण्डलं गणनीयम् त्रिकं त्रिकं मध्यमं स्यात् अग्निभे मार्गं उच्यते ।

भाषा—यदि प्रश्न काल में लग्न की राशि चर हो तो नष्ट द्रव्य दूर समझे । स्थिर हो तो गृह में ही समझे । तथा द्विस्वभावराशि हो तो गृह से बाहर आस-पास ही धन होता है । अब नक्षत्र के आधार पर धन के ज्ञान का प्रकार बतलाते हुए कहते हैं कि कृत्तिका नक्षत्र से आरम्भ कर ३, ३ नक्षत्रों को मध्य से पूर्वादि दिशाओं में स्थापित करे और जिस दिशा में प्रश्ननक्षत्र हो उसी दिशा में नष्ट वस्तु को गया समझना चाहिए । अथवा चन्द्रमा जिस नक्षत्र पर हो उससे ३, ३ नक्षत्र कोष्ठकानुरूप रखकर पूर्ववत फलादेश करना चाहिए ॥ १२–१४ ॥

उ०

	उषा. श्र. ध.	श. पूभाप.उभाप.	रे. अ. भ.	
प०	ज्ये. मू. पूषा.	कृ. रो. मृ.	आ. पुन. पु.	पू०
	स्वा. वि. अनु.	उफा. ह. चि.	श्ले. म. पू. फा.	

द०

चौरावस्थाज्ञानमाह—

कुमारिकां बालशशी बुधश्च वृद्धां शनिः सूर्यगुरुः प्रसूताम् ।
सविस्मयां भौम सितौ विषत्त एवं वयः स्यात्पुरुषेषु चैवम् ॥१५॥

इति श्रीप्रश्नचण्डेश्वरे नष्टवस्तुप्रश्नाध्यायः चतुर्थः ॥ ४ ॥

अन्वयः—बालशशी, बुधश्च कुमारिकां, शनिः वृद्धां, सूर्यः गुरुः प्रसूताम्, भौमसितौ सविस्मयां विषत्त एवं पुरुषेषु च वयः स्यात् ।

भाषा—बाल चंद्रमा और बुध के सबल लग्नेश होने पर कुमारी चोर हो, शनि हो तो वृद्धजन, सूर्य और गुरु हो तो प्रसूता हो, मंगल और शुक्र हो तो चिन्तातुर तथा साश्चर्य जन चोर होता है, इसी प्रकार (पुरुष) चोर के अवस्थादि का ज्ञान भी करना चाहिए ॥ १५ ॥

अथ पञ्चमोऽध्यायः

मुष्टिगतप्रश्नज्ञानमाह—

चन्द्रे शुक्रे भवेद्रौप्यं बुधे स्वर्णमुदाहृतम् ।
गुरौ रत्नयुतं हैमं सूर्ये मौक्तिकमुच्यते ॥
कुजे रत्नं शनौ लोहमस्थिजातं तु शेषके[१] ॥ १ ॥

१. रक्तगौरशुककान्तिपाटलाः पाण्डुचित्ररुचिनीलकाञ्चनाः ।
पिङ्गलः शबलबभ्रुपाण्डुरास्तुम्बुरादिभवनेषु कल्पिताः ॥
जातकपरिजातराशिशीलाध्यायः ।

अन्वयः—मुष्टिगतप्रश्नावसरे लग्ने यदि सर्वेभ्योऽधिकवली चन्द्रः शुक्रो वा तदा रौप्यं भवेत् । वुधे स्वर्णं वदेत् । गुरौ सरत्नं स्वर्णं प्रवदेत् । सूर्ये मौक्तिकं, कुजे रत्नं तथा शनौ लौहं प्रवदेत् तथाऽन्येषु अस्तिजातं ज्ञेयम् ।

भाषा—मेरी मुट्ठी में क्या है इस प्रकार यदि कोई प्रश्न करे तो तात्कालिक प्रश्न लग्न लाकर उसके ग्रहों के अनुसार फलादेश करे । लग्न में वलवान चन्द्रमा या शुक्र होवे तो रौप्य । बुध हो तो स्वर्ण । गुरु हो तो रत्न के साथ स्वर्ण । सूर्य हो तो मुक्ताफल, मंगल हो तो रत्न, शनि हो तो लौह तथा अन्य ग्रह (रा० के०) होने पर हड्डी का होना कहे ॥ १ ॥

मेषेऽरुणो वृषे शुक्लो हरितं मिथुने मतम् ।
पाटलं कर्कटे राशौ धूम्रवर्णश्च केशरी ॥ २ ॥
विचित्रवर्णं कन्यायां कृष्णवर्णं तुलाधरे ।
अलौ पिशंगवर्णं च कुम्भके बभ्रुवर्णकम् ॥
मीने तु मलिनं कान्तं विज्ञेयं राशिवर्णतः ॥ ३ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

भाषा—मेषादि बारह राशियों का वर्ण बतला रहे हैं जो चक्र में स्पष्ट है ॥

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	रा.
रक्त	श्वेत (गौर)	हरित	पाटल	धूम्रपाण्डु	चित्र	कृष्ण	कनक	पिंगल	कर्बुर	बभ्रु	स्वच्छ	वर्ण

गौरः शशी चंपकसन्निभश्च जीवोऽथ भानुश्च पिशंगवर्णौ ।
आपाटलाभश्च महासुतः स्यान्नीलाभसौम्योऽपि च गौरवर्णः ॥४॥
भृगुः शनिर्वा कथितस्तथैव कृष्णश्च कर्बूरतनुर्द्विवर्णः ।
विज्ञाय वर्णान्प्रवदेत्सुनिश्चितं स नोपहास्यं व्रजतीह लोके[1] ॥५॥

॥ इति श्रीप्रश्नचण्डेश्वरे मौष्टिकप्रश्नाध्यायः पञ्चमः ॥५॥

अन्वयः—शशी गौर अथ जीवः चंपकसन्निभश्चेत्यादि सुर्यादिग्रहाणां वर्णान् विज्ञाय सुनिश्चितं प्रवदेत् तदा स इह लोके उपहासं न व्रजति ।

---

१. द्वादश राशियों का वर्णज्ञान तथा नवग्रहों का वर्णादि ज्ञान श्रीनीलकण्ठ दैवज्ञ द्वारा रचित ग्रन्थ "ताजिकनीलकण्ठी" से करना चाहिए । या अन्यान्य ग्रन्थाधार पर करना चाहिए ।

भाषा—चन्द्रमा गौरवर्ण, गुरु चम्पकसदृश पीतवर्ण, सूर्य पिशंगवर्णः (इषद्रक्त), मंगल पाटलाभ (अतिरक्तवर्ण), बुध नीलवर्ण (दूर्वा श्याम), शुक्र गौरवर्ण, और शनि कृष्णवर्ण कर्बूरतनु तथा विवर्ण होता है। इस प्रकार ग्रहों का वर्ण ज्ञात कर अच्छी तरह से फलादेश करनेवाला दैवज्ञ इस लोक में उपहास को प्राप्त नहीं होता ॥ ४-५ ॥

अथ षष्ठोऽध्यायः

गमनागमनप्रश्नः—

त्रिकोणे कुजात्सौरिशुक्रज्ञजीवा,
यदैकोऽपि वा नो गमोऽर्काच्छशी वा ।
बलीयांस्तु मध्ये तयोर्यो ग्रहः स्यात्
स्वकीयां दिशं प्रत्युतासौ नयेच्च ॥ १ ॥

अन्वयः—कुजात् त्रिकोणे (९, ५) सौरिः, शुक्रः, ज्ञः जीवाः यदा (समस्ताः) एकोऽपि वा तथा अर्कात् त्रिकोणे शशी वा भवेत् तदा गमः (गमनं) न स्यात्। प्रत्युत एतेषां मध्ये यो ग्रहः बलीयान् स्यात् सः स्वकीयां दिशं नयेत्।

भाषा—मंगल से त्रिकोण (९, ५) में यदि शनि, शुक्र, बुध, और गुरु एकसाथ या इनमें से एक भी ग्रह बैठा हो अथवा सूर्य से त्रिकोण में चन्द्रमा बैठा हो तो प्रश्नकर्त्ता अपने अभिलषित दिशा की यात्रा नहीं करता है। प्रश्न कालिक ग्रहों में जो सबसे बलवान् ग्रह है, उसकी दिशा में प्रश्नकर्त्ता जाता है। सूर्यादि ग्रहों तथा राशियों का दिशादि पहले कहा जा चुका है ॥ १ ॥

शुभावहा यात्रामाह—

चरोदये शीतकरे स्थिरर्क्षे सौम्यग्रहैः संयुतवीक्षितैर्वा ।
यात्रा भवेत्सौख्यजयार्थसिद्ध्यै कल्याणदात्री निरुपद्रवा च ॥२॥

अन्वयः—चरोदये (चरराशि १, ४, ७, १० लग्ने) शीतकरे चन्द्रे स्थिरर्क्षे (२, ५, ८, ११) लग्नः सौम्यग्रहैः शुभग्रहैः संयुतवीक्षिते र्वा स्यात्तदा यात्रा निरुपद्रवा सौख्यजयार्थदात्री भवेत्।

भाषा—लग्न चरराशि में हो, चन्द्रमा स्थिरराशि में बैठा हो तथा लग्न में शुभग्रहों का योग हो या लग्न को शुभग्रह देखते हों तो यात्रा उपद्रव रहित, सुख, जय और अर्थ को देने वाली होती है ॥ २ ॥

स्थिरोदये शीतकरे स्थिरर्क्षे पापग्रहैः संयुतविक्षितैर्वा ।
प्रष्टुः प्रवासो न भवेत्स्वधाम्नः स्थितिः प्रदिष्टा सुखसिद्धये च ॥३॥

अन्वयः—स्थिरोदये (स्थिर २, ५, ८, ११ लग्ने) शीतकरे स्थिरर्क्षे पापग्रहैः संयुतविक्षितैः वा तदा प्रष्टुः प्रवासो न भवेत् अपि च सुखसिद्धये स्वधाम्नः स्थितिः प्रदिष्टा ।

भाषा—स्थिर लग्न हो तथा स्थिर राशि में चन्द्रमा बैठा हो । लग्न पापग्रहों से युक्त हो या देखा जाता हो तो प्रश्नकर्त्ता की यात्रा नहीं होती बल्कि सुख सिद्धि के लिए या शुभ कार्य के लिए घर में ही (स्थान में ही) रहना पड़ता है ॥ ३ ॥

द्वङ्गोदये द्वङ्गगते हिमांशौ पापग्रहै र्दृष्टिगतै र्न सौम्यैः ।
प्रष्टुर्निवृत्तिः परदेशयाने क्लेशार्थनाशोऽरिपराजयश्च ॥ ४ ॥

अन्वयः—द्वङ्गोदये (द्विस्वभाव ३, ६, ९, १२ लग्ने), हिमांशौ द्वङ्गगते, पापग्रहैः गतैः दृष्टिगते र्वा तथा सौम्ये न दृष्टिगतैः तदा प्रष्टुः परदेशयाने निवृत्तिः, क्लेशं, अर्थनाशः अरितः पराजयश्च निर्दिशेत् ।

भाषा—द्विस्वभाव राशि ३, ६, ९, १२ लग्न हो तथा चन्द्रमा द्विस्वभाव राशि में बैठा हो । लग्न पर पापग्रहों की दृष्टि हो या लग्न में पाप ग्रह बैठे हों और लग्न पर किसी शुभग्रह की दृष्टि न हो तो प्रश्नकर्त्ता की यात्रा शीघ्र लौटने वाली, क्लेशकारक, धनहानिकारक, शत्रुभय करनेवाली होती है ॥ ४ ॥

क्रूरे कलत्रे हि व्रजेद्यदर्थं तत्कार्यनाशो गमनं च न स्यात् ।
पापग्रहैः कर्मगतैर्न यात्रा स्याज्ज्येष्ठबन्धोर्नृपतेर्निषेधात् ॥ ५ ॥
त्रिलाभषष्ठोपगतैश्च पापैर्यात्राप्रयाणादिषु संक्षयः स्यात् ।
मार्गान्निवृत्तिश्च रसातलस्थे भूयो ग्रहैः केन्द्रगतैश्च सिद्धिः ॥ ६ ॥

अन्वयः—प्रश्नलग्नात् कलत्रे सप्तम भवने क्रूरग्रहे पापग्रहे सति यदर्थमुद्दिश्य व्रजेत्तदर्थस्य कार्यस्य नाशः गमनं च न स्यात् । कर्मगतैः दशमस्थानस्थितैः पापग्रहैः ज्येष्ठबन्धोः नृपते र्वा निषेधाद यात्रा न स्यात् । त्रि ३, लाभ ११ षष्ठोपगतैः पापैः च यात्रा प्रयाणादिषुः व्रजनः पुरुषस्य संक्षयो नाशः स्यात । पापैः रसातलस्थे मार्गान्निवृत्तिः भवेत् । भूयः केन्द्रगतैश्च सिद्धिः भवेत ।

भाषा—प्रश्नलग्न से सप्तम स्थान में पापग्रह बैठे हों तो जिस कार्य के लिए यात्रा करे, वह पूर्ण न हो तथा यात्रा असफल हो। यदि प्रश्नलग्न से दशम स्थान में पापग्रहों का योग हो तो बड़े भाई या राजा की आज्ञा से यात्रा स्थगित करना पड़े । तृतीय एकादश और जन्म स्थान में पापग्रह बैठे हों तो यात्रा

तथा प्रयाण (लम्बी अवधि की यात्रा) में क्षय होता है। यदि पापग्रह चतुर्थ भाव में स्थित हों तो पथिक को मध्यमार्ग से लौटना पड़े तथा यदि केन्द्र में पापग्रह हों तो यात्रा से सिद्धि होवे ॥ ५-६ ॥

लग्नेशकर्माधिपती च लग्ने केन्द्रायगौ श्रेष्ठफलं प्रयाणात् ।
धने स्थिरे भूरिधनस्य लाभस्तुर्ये च यातुः सुखसंपदः स्युः ॥ ७ ॥
लग्ने शुभे देहसुखं शुभाढ्यं सौख्यार्थलाभः शुभकार्यसिद्धिः ।
सुखस्थिते सौख्यजयार्थलाभाः स्युः कार्यसिद्धिर्विविधाम्बराप्तिः ॥८॥

अन्वयः—लग्नेशकर्माधिपती: लग्ने, वा केन्द्रायगौ (१, ४, ७, १०, ११ प्रयाणात् श्रेष्ठ फलं धने स्थिरे भूरिधनस्य लाभः, तुर्ये च यातुः सुखसंपदः स्युः लग्ने शुभे देह सुखं शुभाढ्यं, सौख्य अर्थलाभः शुभकार्यसिद्धिः स्यात्। सुखस्थिते सति सौख्यं, जय-अर्थलाभाः स्युः कार्यसिद्धिः तथा विविधाम्बराप्तिः (भवति)।

भाषा— लग्नेश और दशमेश यदि लग्न में हों तो अथवा केन्द्र १, ४, ७, १० एकादश ११ में हों तो प्रयाण से उत्तम फल प्राप्त होता है। प्रश्न लग्न से धनस्थान में स्थिर राशि हो तो प्रभूत धनलाभ, चतुर्थ में स्थिर राशि हो तो यात्रा करने वाले को सुख सम्पति प्राप्त होती हैं। लग्न में शुभग्रह हों तो शरीरसुख हो एवं सौख्य, अर्थलाभ तथा शुभ कार्य सिद्ध होवें चतुर्थ में सौख्य, जयप्राप्ति, अर्थलाभ, कार्य सिद्धि तथा विविध प्रकार के वस्त्रों की प्राप्ति होती है ॥ ७-८ ॥

धनलाभस्थानमाह—

शुभोस्तगो यत्र च याति गत्या तत्रास्ति रम्या धनवाहनाप्तिः ।
धनस्थिते सौख्यजयार्थलाभः केन्द्रे च कोणे शुभकार्यसिद्धिः ॥९॥

अन्वयः—अस्तगो शुभः (स्व)गत्या यत्र याति तत्र रम्याधनवाहनाप्तिः अस्ति। धनस्थिते च सौम्यग्रहे सौख्यजयार्थलाभः तथा केन्द्रे कोणे च शुभकार्य-सिद्धिः स्यात्।

भाषा—सप्तमस्थान में बैठा हुआ कोई शुभग्रह अपनी गति के अनुसार जहाँ जाता है वहाँ से मनुष्य को सुन्दर धनवाहनादि का लाभ होता है। धन में शुभग्रह हों तो सुख, जय तथा धन का लाभ, तथा केन्द्र या कोण में शुभ कार्य की सिद्धि होती है ॥ ९ ॥

पथिकागमनप्रश्नमाह—

मार्गस्थं पथिकं ब्रूते द्यूने चन्द्रो व्यवस्थितः ।
मार्गनाथेन युग्दृष्टः पथिकागमनं तथा ॥ १० ॥

अन्वयः—चन्द्रः द्यूने व्यवस्थितः पथिकं मार्गस्थं इति ब्रूते तथा मार्गनाथेन युक्ते दृष्टे च पथिकागमनं वदेत् ।

भाषा—प्रश्न लग्न के अनुसार पथिक के आगमन प्रश्न में यदि चन्द्रमा लग्न से सप्तम स्थान में हो तो पथिक मार्ग में है (चल चुका है) ऐसा कहे । तथा यदि प्रश्नलग्न मार्गस्वामी चतुर्थेश से योग करे या दृष्ट हो तो पथिक का शीघ्र आना कहे ॥ १० ॥

पथिकः कार्यं कृत्वाऽऽगमिष्यति न वा इति प्रश्ने—

लाभेशकर्मायगते स्वकार्यं तदा शुभं सिद्ध्यति पृच्छकस्य ।
तृतीयगे वा नवमे धनेशे कृत्वा स्वकार्यं स्वपुरे प्रयाति ॥११॥

अन्वयः—यदा लाभेशे कर्म-आयगते तदा पृच्छकस्य स्वकार्यं शुभं सिद्धयति । धनेशे तृतीयगे नवमे वा यदा भवेत् तदा पथिकः स्वकार्यं कृत्वा स्वपुरे प्रयाति ।

भाषा—यदि लाभेश दशम या एकादश भाव में बैठा हो तो प्रश्नकर्त्ता को शुभ फल प्राप्त होता है अर्थात् पथिक कार्य में सफल होता है । यदि धनेश तृतीय या नवम स्थान में हो तो पथिक अपना कार्य पूरा कर अपने नगर को सकुशल आता है ॥ ११ ॥

शीतांशुलग्नेश्वरवित्तपानां केन्द्रस्थितानां शुभखेचराणाम् ।
शुभग्रहैर्वीक्षितसंयुतानां श्रेष्ठं फलं व्यस्तमसद्ग्रहाणाम् ॥१२॥

अन्वयः—शीतांशुः लग्नेश्वरः वित्तपानां शुभखेचराणां बुधगुरुशुक्रपूर्णचन्द्राणां केन्द्रस्थितानां शुभ्रग्रहैर्विक्षितसंयुतानां फलं श्रेष्ठम् । असद्ग्रहाणां योगे विपरीतं अशुभं फलं ज्ञेयम् ।

भाषा—चन्द्रमा, लग्नेश और धनेश तथा शुभ्रग्रहों के केन्द्र में रहने तथा शुभग्रहों से युत या दृष्ट होने पर फल श्रेष्ठ होता है और अशुभ ग्रहों के सम्बन्ध से अशुभ फल होता है ॥ १२ ॥

कार्यसिद्धिकालमाह—

सर्वोत्तमबलोलग्नाद्यस्मिन्स्थाने ग्रहः स्थितः ।
मासैस्तत्तुल्यसंख्याकैर्निवृत्तिं यातु रादिशेत् ॥ १३ ॥

अन्वयः—प्रश्नलग्ने चक्रे सर्वोत्तमबलः ग्रहः लग्नात् यस्मिन् स्थाने स्थितः । तत्तुल्यसंख्यकैः मासैः यातुः निवृत्तिं आदिशेत् ।

भाषा—प्रश्नकालिक चक्र में सबसे अधिक बलवान ग्रह लग्न से आगे जिस स्थान में बैठा हो उसी राशि के तुल्य माह में पथिक अपना कार्य पूर्णकर लौटता है ॥ १३ ॥

चन्द्रे दिनानि वाच्यानि भानौ मासावधिं वदेत् ।
जीवे प्रश्नगते चैव वर्णमात्रं विनिर्दिशेत् ॥ १४ ॥
अष्टमासा वधिर्लाभो भौमे लग्ने समादिशेत् ।
बुधे मासावधिर्लाभो शुक्रे हायनगे तथा ॥ १५ ॥
राहौ लग्नगतेकेतौ षड्मासोन्तरितं तथा ।
विचार्य्य सुमहद्बुद्धया ब्रूयात्सर्वं सुनिश्चितम् ॥ १६ ॥

अन्वयः—चन्द्रे दिनानि वाच्यानि, भानौ मासावधिं वदेत् । जीवे प्रश्नगते च वर्षमात्रं-एव विनिर्दिशेत् । भौमेलग्ने अष्टमासावधिः लाभः समादिशेत् । बुधे मासावधिः तथा शुक्रे हायनगे लाभः । राहौ केतौ च लग्नगते षड्मासान्तरे । एवं सुमहद्बुध्यां सुनिश्चितं सर्वं विचार्य ब्रूयात् ।

भाषा—प्रश्न लग्न में सर्वोत्तम बली यदि चन्द्रमा हो तो उतने दिन का निर्देश करे । सूर्य हो तो उतने मास, गुरु हों तो उतने ही वर्ष, मंगल हो तो ८ माह, बुध हो तो एक मास शुक्र हो तो १ वर्ष तथा राहु और केतु के होने पर ६ माह के अन्तर पर पथिक आता है ॥ १४–१६ ॥

विलग्नचन्द्रान्तरभागनिघ्नं यात्रा विलग्नेष्टमिहाग्निभक्तम् ।
आयातिराज्यं खलु लब्धमासैर्दिनैर्घटीभिश्च यथा प्रदेशम् ॥१७॥

अन्वयः—इह यात्राविलग्नेष्टम्, विलग्नचन्द्रान्तरभागनिघ्नं, अग्निभक्तं लब्ध-मासैः दिनैः घटीभिश्च यथाप्रदेशं खलु राज्यं आयाति ।

भाषा—यात्रा विलग्नेष्ट अर्थात् चतुर्थ भाव की स्पष्ट राश्यादि को लग्न और चन्द्रमा के स्पष्टान्तर से गुणाकर उसमें ३ का भाग देने से लब्धि मास दिन और घटी व्यतीत होने पर यात्रा से अपने राज्य को या अपने गृह को यात्री लौटेगा ॥ १७ ॥

तिथिप्रहरसंयुक्तास्तारका वारमिश्रिताः ।
सप्तभिश्च हरेद्भागं शेषं चैव शुभाशुभम् ॥ १८ ॥
प्रथमे संस्थितिस्तत्र द्वाभ्यामागमनं भवेत् ।
तृतीये चार्द्धं मार्गस्थश्चतुर्थे यानमादिशेत् ॥ १९ ॥
पंचमे पुनरावृत्तिं षष्ठे व्याधिं विनिर्दिशेत् ।
शून्ये शून्यं विजानीयाच्छारदावचनं यथा ॥ २० ॥

अन्वयः—तिथिप्रहरतारका संयुक्ता तथा वारमिश्रिताः सप्तभिश्च हरेत शेषं भागं शुभाशुभं च ज्ञेयम् । प्रथमे तत्र संस्थितिः, द्वाभ्यां आगमनं भवेत्, तृतीये च अर्ध-

मार्गस्थः, चतुर्थे यानं (यानस्थमिति) आदिशेत्, पञ्चमे पुनरावृत्तः, षष्ठे व्याधिं विनिर्दिशेत्, शून्ये शून्यं विजानीयात् यथा शारदावचनम् ।

भाषा—तिथि प्रहर नक्षत्र और दिन की संख्याओं का योग कर सात का भाग देने पर क्रमशः १ शेष में परदेश में स्थित है । २ में आगमन, ३ में अर्धमार्ग में, ४ में यानपर सवार, ५ में पुनरावृत्तिः, (आकर पुनः चला जाय), ६ में रुग्ण तथा शून्य में मृत्युग्रस्त कहना चाहिए, ऐसा शारदा का वचन है ॥ १८–२० ॥

तिथिं वारं च नक्षत्रं पथिकाक्षरसंयुतिम् ।
एकीकृत्य मुनेर्भागं ज्ञातव्याऽऽगमनावधिः ॥ २१ ॥
स्थानं क्षितौ वहि र्मार्गे चलचित्तं द्वितीयके ।
रामे वेदे भवेन्मार्गे पञ्चमे गृहमागतः ॥ २२ ॥
षष्ठे रोगो भवेत्कश्चिच्छून्ये मृत्युं विनिर्दिशेत् ॥

अन्वयः—शुक्लप्रतिपदादितिथिं, वारं, नक्षत्रं, पथिकाक्षरसंयुतिं च एकीकृत्य मुनेर्भागं (तदा) आगमनावधिः ज्ञातव्याः । स्थानक्षितौ, वहिर्मार्गे द्वितीयके चलचित्तं, रामे वेदे च मार्गे भवेत् । पञ्चमे गृहमागतः, षष्ठे रोगो भवेत् , शून्ये च मृत्युं विनिर्दिशेत् ।

भाषा—शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से आरम्भकर गततिथि संख्या, दिनसंख्या, नक्षत्र संख्या तथा पथिक के नामाक्षरों की संख्या । इन सबका योगकर ७ से भाग दे । एक शेष में परदेशी यथास्थान है । २ शेष में मन आने के लिए सोच रहा है । ३ शेष तथा ४ शेष में परदेशी मार्ग में है । ५ शेष में घर में आ गया है । ६ शेष में रोगी है तथा ७ शेष में उसकी मृत्यु हो चुकी है ऐसा कहना चाहिए ॥ २१–२२ ॥

रविरङ्गारको दूरे मार्गे शुक्रबृहस्पती ।
बुधचन्द्रौ समीपस्थौ शनिराहू स्थिरं वदेत् ॥ २३ ॥

॥ इति श्री दैवज्ञरामकृष्णविरचिते प्रश्नचण्डेश्वरे गमागमप्रश्नाध्यायः षष्ठः ॥ ६ ॥

अन्वयः—प्रश्नलग्ने रविः अङ्गारकः दूरे (दूर देशे पथिकस्य स्थितिः) शुक्र-बृहस्पती मार्गे, बुधचन्द्रौ च समीपस्थौ, शनिराहौ स्थिरं वदेत् ।

भाषा—ग्रहों के द्वारा दूरी का ज्ञान कराते हुए कहते हैं कि यदि प्रश्नलग्न में रवि मंगल हों तो प्रवासी अधिक दूर देश में विराजमान है । शुक्र और गुरु है तो पथिक मार्ग में है । चन्द्रमा और बुध लग्न में हों तो अति नजदीक आ गया है तथा शनि और राहु लग्न में हों तो परदेश में ही पथिक अविचल मन है ॥ २३ ॥

अथ सप्तमोऽध्यायः

मैत्री भविष्यति न वा इति प्रश्ने—

तिथिवारर्क्षयोगश्च प्रभुनामयुतस्त्रिभिः ।
युक्तः स्याद्भाजितो द्वाभ्यामिन्दौ मैत्री द्विके नहि ॥ १ ॥

अन्वयः—तिथिः वारं, ऋक्षं, योगः, प्रभुनामयुतः पुनः त्रिभिः च युक्तः, द्वाभ्यां भाजितः इन्दौ शेषे मैत्री स्यात् । द्विके शेषे मैत्री न स्यादिति शेषः ।

भाषा—जिस दिन का प्रश्न हो उस दिन की तिथि, वार, नक्षत्र, योग संख्या तथा प्रभुनामाक्षर संख्या के साथ ३ जोड़कर २ से भाग दे, यदि शेष १ आवे तो मैत्री होवे और २ शेष बचे तो मैत्री नहीं होगी, ऐसा कहे ॥ १ ॥

युद्धसम्बन्धिप्रश्नः—

युद्धे भाविनि चेत्प्रश्ने लग्नेशः सप्तमाधिपः ।
शत्रू स्यातां तदा युद्धं भविष्यति न चान्यथा ॥ २ ॥

अन्वयः—युद्धे भाविनि प्रश्ने चेत् लग्नेशः सप्तमाधिपः शत्रू स्यातां तदा युद्धं भविष्यति अन्यथा च न भविष्यतीति वाच्यम् ।

भाषा—भविष्य में युद्ध की सम्भावना को लेकर यदि कोई प्रश्न करे, ऐसी दशा में प्रश्न लग्नेश और सप्तमाधिपतिग्रह यदि परस्पर शत्रू हों तो युद्ध होता है । अन्यथा नहीं, ऐसा कहे ।

मित्र शत्रू उदासीन आदि को 'शत्रू मंदसितौ समश्च शशिजः' इत्यादि के द्वारा बतलाया गया है । तथा तात्कालिक और नैसर्गिक मैत्री के आधार पर पंचधा मैत्री भी कही गई है, किन्तु यहाँ पर तात्कालिक मैत्री ही लेना उचित होगा ॥ २ ॥

गुप्तहननप्रश्नः—

रिपुं हन्तुं गमिष्येऽद्य लग्ने क्रूरयुते जयः ।
लग्नेन्दू शुभदृष्टौ वा जयः प्रष्टुर्न चान्यथा ॥ ३ ॥

अन्वयः—अहं अद्य रिपुं हन्तुं गमिष्ये (इति प्रश्ने) लग्ने क्रूरयुते जयः, लग्नेन्दू शुभदृष्टौ वा प्रष्टुर्जयः अन्यथा न ।

भाषा—मैं गुप्तरूप से छिपकर शत्रु को मारने जा रहा हूँ विजय होगी या नहीं ? इस प्रकार के प्रश्न में प्रश्न कालिक लग्न यदि क्रूरग्रहों से युत हो तो कार्य सिद्ध हो, अथवा यदि लग्न और चन्द्रमा को शुभग्रह देखते हों तो भी जय होवे अन्यथा नहीं ॥ ३ ॥

नोट—इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर दैवज्ञ को नहीं देना चाहिए । क्योंकि

इस तरह के प्रश्न में दैवज्ञ को क्या पता है कि अमुकजन उसका वास्तव में शत्रु है या नहीं। यदि शत्रु है भी तो क्या वह वध का ही पात्र है ? इत्यादि प्रश्न जाल में पड़ने से तो उत्तम यही होगा कि इस तरह के प्रश्न को दैवज्ञ टाल जाय।

दुर्गभंगप्रश्नः—

पापैः सुखव्योमगतैः परैर्यतप्रवेष्टितो येन नरेश्वरेण।
स्वयं च न स्यादचिरेण दुर्गं मुक्तं रिपूर्णं भयविह्वलं स्यात् ॥

अन्वयः—प्रश्नलग्नात् पापैः सुखव्योमगतैः परैः शत्रुभिः सह येन नरेश्वरेण प्रवेष्टितः स एव अचिरेण कालेन न स्यात्। रिपूर्णं (रिपुभिः ऊर्णं आच्छादितं—'ऊर्णुञ् आच्छादने') भयविह्वलं दुर्गं मुक्तं च स्वयं स्यात्।

भाषा—प्रश्न कालिक लग्न से यदि पापग्रह चतुर्थ और दशम भाव में स्थित हों तो अन्य राजा की सहायता से किला को वेष्टित (घेरने) करनेवाला राजा भाग जाता है और शत्रुपक्ष से दुर्ग भयरहित हो जाता है ॥ ४ ॥

लग्ने सुतस्थे दशमे च जीवे सुखं प्रसूतं परितस्त्वरा च।
निगूह्यते दुर्गमिहोपगम्य पराङ्मुखं तद्भवति क्षणेन ॥ ५ ॥

अन्वयः—जीवे लग्ने सुतस्थे दशमे च तदा राज्ञः प्रभूतं सुखं परित. त्वरा (संभ्रमस्त्वरा कोषः ३।२।२३) च इह दुर्गमुपगम्य निगूह्यते। शत्रू च तस्य क्षणेन पराङ्मुखं भवति।

भाषा—यदि बृहस्पति लग्न पञ्चम या दशम स्थान में बैठा हो तो राजा बहुत सुखी होता है और शीघ्र दुर्ग को प्राप्त करता है तथा शत्रु विमुख हो शीघ्र भाग जाता है ॥ ५ ॥

नृराशिसंस्था उदये शुभाः स्युर्व्ययाय संस्थाश्च यदा भवन्ति।
यदाऽऽशु संधिं प्रवदेन्नराणां पापैर्द्विदेहोपगतैर्विरोधम् ॥६॥
संधिं कुर्यात्सुहृद्दृष्टिर्लग्नेशास्तपयोर्मिथः।
पृच्छायां लग्नपे क्रूरे संधिर्जाता विनश्यति ॥ ७ ॥

अन्वयः—प्रश्नकाले यदा नृराशिसंस्थाः ग्रहा उदये, व्यय-आय संस्थाश्च शुभाः भवन्ति तदा नराणमाशु सन्धिं प्रवदेत्। पापैः द्विदेहोपगतैश्च यदा तदा विरोधम् लग्नेशास्तपयोर्मिथः सुहृद्दृष्टिः सन्धिं कुर्यात्। पृच्छायां लग्नपे क्रूरे सति च जाता सन्धिरपि विनश्यति।

भाषा—प्रश्न काल में यदि पुरुष राशि गत शुभग्रह लग्न में हों तथा बारहवें और एकादश में शुभग्रह हों तो शीघ्र सन्धि होती है। यदि पापग्रह द्विस्वभाव राशि में हों तो विरोध बढ़े। लग्नेश और सप्तमेश की परस्पर मित्रदृष्टि हो तो सन्धि होती है और प्रश्न कालिक लग्नेश यदि क्रूरग्रह हो तो हुई सन्धि भी विनष्ट हो जाती है ॥ ६–७ ॥

अथ विवाहप्रश्नः—

कर्कतौलीवृषाश्चन्द्रयुक्ताः शुभनिरीक्षिताः ।
पृच्छाकाले तदा नृणां कन्यालाभो भवेद् ध्रुवम् ॥ ८ ॥
योषिद्ग्रहस्थिताः शेषाः पश्यन्ति स्त्रीनवांशकम् ।
लग्ने च स्यात्तदा लाभः स्त्रियां पुंसोऽपि तादृशः ॥ ९ ॥

अन्वयः—यदा प्रश्ने पृच्छाकाले कर्कतौली वृषाः एतेष्वन्यतमा चन्द्रयुक्ताः शुभनिरीक्षिताः तदा नृणां ध्रुवं कन्यालाभो भवेत् । योषिद्ग्रहाः स्त्री नवांशकं पश्यन्ति लग्ने च स्यात्तदा स्त्रियां लाभः । तादृशः पुंसः अपि ।

भाषा—प्रश्नकाल में कर्क तुला और वृष इनमें कोई लग्न हो, चन्द्रमा का योग तथा शुभग्रह की दृष्टि हो तो प्रश्नकर्त्ता के अनुसार निश्चय ही कन्या (स्त्री) का लाभ हो । शेष राशियों में स्त्रीग्रह हों तथा स्त्री नवांश को ही देखते हों तथा लग्न में हों तो स्त्री का लाभ होता है । इसी प्रकार यदि कोई स्त्री पति प्राप्ति का प्रश्न करे तो उसे पति की प्राप्ति होगी ॥ ८-९ ॥

गर्भसम्बन्धिप्रश्नः[1]—

कान्ताभिधानं गुणितं मुनीन्द्रैस्तिथ्या युतं नागहृतं च शेषम् ।
समे च कन्या विषमे च पुत्रो निःशेषभागं मरणाय नूनम् ॥१०॥

अन्वयः—कान्ताभिधानं (स्त्री नाम राशि) मुनीन्द्रैः सप्तभिः गुणितं, तिथ्या युतं, नागहृतं च यत् शेषम् तेन फलं वदेत् । यदा समे कन्या, विषमे च पुत्रः, निःशेषभागं च नूनम् मरणाय भवेत् ।

---

१. बृहज्जातके—

ओजस्थैः पुरुषांशकेषुवलिभिर्लग्नार्कगुर्विन्दुभिः ।
पुञ्जन्मप्रवदेत्समांशकगतैर्युग्मेषु तैर्योषितः ॥
गुर्वर्कौ विषमे नरं शशिसितौ वक्रश्च युग्मे स्त्रियं ।
द्व्यङ्गस्था बुधवीक्षणाच्च यमलौ कुर्वन्ति पक्षे स्वके ॥ १ ॥
विहाय लग्नं विषमर्क्षसंस्थः सौरोऽपि पुञ्जन्मकरो विलग्नात् ।
प्रोक्तग्रहाणामवलोक्य वीर्यं वाच्यः प्रसूतौ पुरुषोऽङ्गना वा ॥ २ ॥

षट्पञ्चाशिकायाम्—

विषमस्थितेऽर्कपुत्रे सुतस्य जन्मान्यथांगनायाश्च ।
लभ्यावरस्य नारी समस्थितेऽतोऽन्यथा वामम् ॥ १ ॥
पुंवर्गे लग्नगते पुंग्रहदृष्टे बलान्विते पुरुषः ।
युग्मे स्त्रीग्रहदृष्टे स्त्रीबुधयुक्ते तु गर्भयुता ॥ २ ॥

भाषा—स्त्री के नाम राशि को ७ से गुणाकर तात्कालिक तिथि का योगकर उसे ९ का भाग दे। भाग देने पर समराशि, २, ४, ६, ८ शेष रहे तो कन्याजन्म, विषमराशि १, ३, ५, ७ शेष रहे तो पुत्र जन्म और शून्य शेष रहने पर गर्भस्थ-जातक की मृत्यु होगी ऐसा कहना चाहिए ॥ १० ॥

अपरविधिः—

तिथिवारं च नक्षत्रं गर्भिणी नामसंयुतम्।
सप्तभिश्च हरेद्भागं शेषं च फलमादिशेत् ॥ ११ ॥
रविगुरुमंगलसौरे पुत्रः शुक्रज्ञसोमेषु वदेच्च कन्याम्।
विज्ञाय चाङ्कं प्रवदेत् सुनिश्चितं स नोपहास्यं व्रजतीह लोके ॥१२॥

अन्वयः—तिथि-वारं, नक्षत्रं, गर्भिणी नाम संयुतम् कृत्वा सप्तभिश्च हरेत् शेषं भागं च फलं आदिशेत्। यथा—'समे च कन्या विषमे च पुत्रो निःशेष भागं मरणाय नूनम्'। प्रश्न लग्ने रवि-गुरु-मंगल-सौरिः एषु लग्न स्थितेषु सत्सु पुत्रो वाच्यः। शुक्रज्ञसोमेषु लग्नगतेषु सत्सु च कन्यां वदेत्। अंकं राशिं च सम्यग्विज्ञाय सुनिश्चितं च प्रवदेत् तदा इह लोके उपहासं न व्रजतीति शेषः।

भाषा—तिथि, वार, नक्षत्र तथा गर्भिणी स्त्री के नामाक्षरों की संख्या का योग कर उसमें ७ का भाग देने पर सम शेष में कन्या, विषम शेष में पुत्र और निःशेष में गर्भ नष्ट हो जाता है। इसी प्रकार प्रश्न लग्न में यदि सूर्य मंगल गुरु और शनि बलवान होकर बैठे हों; तो पुत्रकारक तथा शुक्र बुध और चन्द्रमा बैठे हों तथा पूर्णबली हों तो कन्या जन्म कारक होते हैं। इसका अच्छी तरह अर्थात् अंक तथा ग्रहस्थितियों के आधार पर पूर्ण विचार कर जो दैवज्ञ प्रश्न का उचित उत्तर देते हैं उनका कभी उपहास नहीं होता अपि च लोक में उनका सम्मान होता है।

विशेष—इस सम्बन्ध में आचार्य वाराहमिहिर ने अपने 'बृहज्जातक' तथा पृथुयश ने अपनी 'षट् पंचाशिका' में विस्तार से विचार किया है। जिज्ञासु उसे भी देखें और उससे लाभ उठावें। इसके अतिरिक्त प्रायः सभी फलित-ग्रन्थों में किसी न किसी रूप में इसका विवेचन मिलता है[1] ॥ ११-१२ ॥

---

१. परम्परागत वाक्य भी मिलता है जिसका सम्बन्ध प्रश्नचण्डेश्वर के १२वें गर्भप्रश्नजन्य श्लोक से मिल रहा है। इसे प्रस्तुत अनुवादक के पिताजी स्व० श्री पं० गिरजादत्त मिश्र कहा करते थे। यथाः—

रवि गुरु मंगल पुत्र जनावे। सोम शुक्र बुध कन्या पावे ॥
शनिके गर्भ गलित ह्वै जाई। यामे झूठ न माखौं भाई ॥

लग्नस्य विगतैरंशै र्गता मासा निरूपिताः ।
भोग्यांशै र्भोग्यमासाश्च गर्भस्य सुप्रकल्प्यताम् ॥१३॥
समे लग्ने समांशे च शनिः कन्या प्रदो भवेत् ।
विषमे विषमांशे च लग्ने पुत्रप्रदो भवेत् ॥१४॥
ओजभांशे जीवसूर्यौ पुत्रलाभकरौ मतौ ।
समभांशे च यद्येते शुक्रचन्द्रधरासुताः ।
कन्यकाकारका ज्ञेयाः प्रश्नलग्नान्मनीषिभिः ॥१५॥

अन्वयः—प्रश्नलग्नस्य विगतैः अंशैः गतमासा निरूपिताः । तथा व भोग्यांशैः भोग्यमासाश्च गर्भस्य प्रकल्प्यताम् । शनिः समेलग्ने समांशे च कन्याप्रदो भवेत् । विषमे विषमांशे लग्ने च कन्याप्रदो भवेत् । ओजभांशेजीवसूर्यौ पुत्रलाभकरौ मतौ । समभांशे च यद्येते शुक्रचन्द्रधरासुताः तदा कन्याकारका ज्ञेयाः मनीषिभिः प्रश्न लग्नात् एतत् सर्वं उक्तम् ।

भाषा—ऋषियों ने प्रश्न लग्न के आधार पर फलादेश किया है । प्रश्न लग्न के गत अंशों में गतमास और भोग्यांशों के आधार पर भोग्यमासों की कल्पना करनी चाहिए । (कहीं कहीं टीकाकारों ने यहाँ पर नवांश का अर्थं दशमांश किया है और दशमास के गर्भ की संगति बैठायी है परन्तु यह असंगत होगा । नवमांश के द्वारा भी दशमांश का ठीक विवेचन किया जा सकता है । यथा प्रश्न काल को मध्य-मानकर उसकी गणना न कर शेष में भुक्त भोग्य का विभाजन कर ले । अथवा दशमास का नवमभाग भी यदि कर ले तो कठिनाई नहीं होगी और जैसे ३०° का नवमांश ३°/२०″ लेते हैं उसी प्रकार ३० दिन का ३ दिन २० घटी लेकर उचित नवांश का व्यवहार कर सकते हैं । किन्तु नवांश को कभी दशमांस और कभी नवमांस कल्पनाकर अपना स्वार्थ साधन शास्त्रमर्यादा के अनुकूल नहीं कहा जा सकता ।) शनि यदि समराशि तथा समराशि नवांश में हो तो कन्याप्रद होता है और विषम राशि तथा विषम राशि के नवांश में पुत्रप्रद होता है । इसी प्रकार यदि गुरु और मंगल विषम राशि नवांश में हों तो पुत्रकारक तथा समराशि नवांश में हों तो कन्याप्रद होते हैं ॥ १३–१५ ॥

वार्तासत्यामिथ्या वा इतिप्रश्ने—

वारर्क्षयोगजे योगे तिथिघ्ने वेदभाजिते ।
सत्यमेकेन च द्वाभ्यां तथा सत्यं त्रिभिः पुनः ॥ १६ ॥

अन्वयः—वारो दिनानि, ऋक्षमश्विन्यादि, योगो विष्कुम्भादिः एतेषां योगः

वर्तमानतिथ्या निघ्ने तथा वेदैः भाजिते एकेन पुनः त्रिभिः सत्यम् । द्वाभ्यां च न सत्यम् ।

भाषा—प्रश्नकाल के दिन जो सूर्यादिवार संख्या हो, तथा नक्षत्र संख्या और योग संख्या का योग कर उसे वर्तमान तिथि की संख्या से गुणाकर चार का भाग दे। भाग से यदि शेष १ या तीन बचे तो वार्ता सत्य है अन्यथा असत्य है ऐसा कहे ॥ १६ ॥

वर्षासम्बन्धिप्रश्नः—

वृष्टिं करोत्यवृष्टौ वृष्ट्यां वृष्टिं निवारयति ।
पश्चात्सदैव वृष्टिं कुलिशभृतश्चापमाचष्टे ॥ १७ ॥
चापो मघोनः कुरुते निशाया।
माखण्डलायां दिशि भूपपीडाम्[२] ॥ १८ ॥

अन्वयः—कुलिशं भृत् (कुलिशं वज्रं विभर्ति धारयतीति) चापं, अवृष्टौ (वृष्टि रहित काले) वृष्टिं करोति । वृष्ट्यां (वर्षाऋतुषु) वृष्टिं निवारयति। पश्चात्सदैव वृष्टिं करोति। मघोनः इन्द्रस्य चापो निशायां (रात्रौ दर्शने सति) आखण्डलायां दिशि (पूर्वस्यां) चेत् तदा भूपपीडां करोति ।

भाषा—इन्द्रचाय (इन्द्रधनुष) यदि वर्षा के रहित समय में दृष्टिगोचर हो तो वृष्टि होती है और वर्षा काल में दृष्टिगोचर हो तो वृष्टि का निवारण करता है। तथा

---

१. इन्द्रधनुष का लक्षण—

सूर्यस्य विविध वर्णाः पवनेन विघट्टिताः कराः साभ्रे ।
वियति धनुः संस्थानाये दृश्यन्ते तदिन्द्रधनुः ।' १ ॥
वाराहीसंहिता ॥

२. श्लोक १७ और १८ ये दोनों ही श्लोक वाराही संहिता के इन्द्रायुध लक्षण प्रकरण से अक्षरशः लिए गये हैं और १८वें श्लोक के आधे भाग को ही लिया गया है तथा छन्द भङ्गभय की अवहेलना कर पूरे श्लोक का नंबर दे दिया गया है ।

वृष्टिं करोत्यवृष्ट्यां वृष्टिवृष्ट्यां निवारयत्यैन्द्रयाम् ।
पश्चात् सदैव वृष्टिं कुलिशभृतश्चापमाचष्टे ॥ ६ ॥
चापं मघोनः कुरुते निशायामाखण्डलायां दिशि भूपपीडाम् ।
याम्यापरोदक्प्रभवं निहन्यात् सेनापतिं नायक-मन्त्रिणौ च ॥ ७ ॥

श्लोक ७ का अर्थ—यदि रात्रि के समय इन्द्रचाप पूरब में दिखाई दे तो राजा को कष्ट हो। दक्षिण में दिखाई दे तो सेनापति को, पश्चिम में मुखिया या नायक को और उत्तर में दिखाई दे तो राजा के मन्त्री को कष्ट होता है।

इन्द्रचाप यदि रात्रि के समय पूर्वदिशा में दिखाई दे तो राजा को कष्ट होता है ॥ १७–१८ ॥

परिवेषफलम् :—

रविशशि परिवेषे पूर्वयामे च पीडा
रविशशि परिवेषे वातवृष्टि द्वितीये ।
रविशशि-परिवेषे धान्यनाश-
स्तृतीये रविशशि परिवेषे भूमिकंपश्चतुर्थे[1] ॥ १९ ॥

अन्वयः—रविशशि परिवेषे[1] पूर्वयामे पीडा, द्वितीय यामे वातवृष्टिः, तृतीययामे धान्यनाशः तथा च चतुर्थेयामे भूमिकम्पश्च जायते। रविशशि परिवेषे इति सर्वत्र योजयेत्।

भाषा—सूर्य और चन्द्रमा का परिवेष यदि दिन के प्रथम प्रहर में या रात्रि के प्रथम प्रहर में हो (सूर्य का दिन से और चन्द्रमा का रात्रि से सम्बन्ध समझे) तो जनवर्ग पीड़ा से कष्ट पाता है। द्वितीय प्रहर में परिवेष दृष्टिगोचर हो तो वायु प्रकोप और वर्षा से कष्ट होता है। तृतीय प्रहर में यदि परिवेष हो तो धान्य पदार्थ का नाश होता है और चतुर्थ प्रहर में परिवेष के दृष्टिगत होने पर भूमि कम्प होता है ॥ १९ ॥

---

१. परिवेष का लक्षण : —

सम्मूर्च्छिता रवीन्द्वोः किरणाः पवनेन मण्डलीभूताः ।
नानावर्णाकृतयस्तन्वभ्रे व्योम्नि परिवेषाः ॥ वाराही संहिता ।

अर्थात्—परिवेष प्रायः सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि इन सभी ग्रहों का होता है । "परिवेष मण्डलगतो रवितनयः क्षुद्रधान्यनाशकरः' इयादि" किन्तु सूर्य और चन्द्रमा का परिवेष स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होने के कारण इसका फल कहा गया है । परिवेश एक प्रकार से वायु का उपद्रव है जो आकाश में स्थान विशेष पर दृष्टिगोचर हो जाता है। उस समय सूर्य तथा चन्द्रमा यदि उससे आवृत्त दृष्टिगोचर हों तो उसी का फल कहा गया है। परिवेष में ग्रह का तेज मध्यम हो जाता है और चतुर्दिक मण्डल वृत्ताकार दृष्टिगोचर होता है। यह परिवेश विविध रंगो में दृष्टिगोचर होता है और तदनुसार उनके अधिपतियों को माना गया है। विस्तृत जानकारी के लिए वाराहीसंहिता का परिवेषलक्षण देखना चाहिए।

वृष्टिलक्षणम्—

बुधशुक्रौ समीपस्थौ सजलां कुरुतो महीम् ।
तयोरंतर्गतो भानुः समुद्रमपि शोषयेत्[1] ॥ २० ॥

अन्वयः—बुधशुक्रौ समीपस्थौ तदा महीम् सजलां कुरुतः । तयोः अन्तर्गतं भानुः समुद्रमपि शोषयेत् ।

भाषा—यदि बुध और शुक्र सूर्य के समीप हों तो उत्तम वर्षा का योग होता है ! किन्तु यदि सूर्य, शुक्र और बुध के मध्य में स्थित हो जाय तो समुद्र को भी शोष सकता है ॥ २० ॥

अनुसरति यदा कुजः पतङ्गं घटमिव भिन्नतनुर्जलं ददाति ।
यदि भवति दिवाकराच्च पूर्वं प्रलयघटानपि शोषितुं समर्थः ॥२१॥

अन्वयः—यदा कुजः भौमः पतङ्गं सूर्यमनुसरति तदा घटमिव भिन्नतनुर्जलं ददाति । यदि दिवाकरात् पूर्वं च भवति तदा प्रलयघटां शोषितुम् अपि समर्थः भवेत् ।

भाषा—यदि सूर्य का अनुसरण मंगल करे तो अल्प वृष्टि होती है । यदि सूर्य के आगे-आगे मंगल होवे तो प्रलयकालीन मेघों को भी शोषण करने में समर्थ होता है अर्थात् जब तक मंगल सूर्य के आगे रहे वृष्टि नहीं होती ॥ २१ ॥

एकराशिस्थग्रहाणां फलम्—

द्वौ ग्रहो नृपसंक्षोभस्त्रयो घ्नन्ति नराधिपम् ।
चत्वारो राज्यनाशाय पंच घ्नन्ति जगत्त्रयम् ॥ २२ ॥

अन्वयः—द्वौ ग्रहौ एकराशिस्थितौ तदा नृपसंक्षोभं जनयतः । त्रयः नराधिपम् घ्नन्ति । चत्वारः राजनाशाय तथा पंच ग्रहाः जगत्त्रयम् घ्नन्ति ।

भाषा—दो ग्रह एकराशि में हो तो राजा को क्षोभ होता है । तीन ग्रह एक राशि में हों तो राजा की मृत्यु हो, चार ग्रह एक राशि में हों तो राज्य का नाश हो तथा पांच ग्रह एक राशि में हों तो तीनों लोक कष्ट में पड़ जाता है या नष्ट हो जाता है ॥ २२ ॥

नोट—दो ग्रहों का योग प्रायः प्रति तीसरे दिन चन्द्रमा के सम्बन्ध से हो

---

१. बुध और शुक्र सदा सूर्यासन्न में ही कभी आगे कभी पीछे रहा करते हैं और बुध शुक्र के मध्य में भी प्रायः सूर्य आ जाया करते हैं परन्तु इस योग से वृष्टि पर अत्यधिक प्रभाव नहीं देखा जाता । अतएव इसके लिए वाराही संहितोक्त 'सद्यः वृष्टिलक्षणम्' प्रकरण को देखना चाहिए । आचार्य वाराह मिहिर ने कुल २२ श्लोकों में वर्षा का पूरा विश्लेषण किया है ।

जाता है। तीन ग्रहों का योग भी जो ग्रह एक राशि पर १ माह के करीव रहते हैं उनका योग सम्भव है। परन्तु इसका फल घटित नहीं होता। इस लिए इन दो ग्रहों का तथा तीन, चार और पांच ग्रहों के योग का तात्पर्य यह होना चाहिए कि यदि शत्रु ग्रह एक राशि पर हों तो यह फल होता है विशेषकर पापग्रह होने पर। साथ ही साथ उनकी नैसगिक मैत्री से ही यहाँ तात्पर्य है।

पौषे पंच शनिर्विद्यान्माघे पञ्च रविस्तथा।
फाल्गुने पञ्च भौमाश्च महीनाशाय केवलम् ॥ २३ ॥

अन्वयः—पौषे पंच शनिः, माघे पञ्च रविः तथा फाल्गुने पञ्च भौमाश्च, केवलं महीनाशाय विद्यात्।

भाषा—पौष मास में पांच शनिवार, माघ मास में पांच रविवार तथा फाल्गुन मास में पांच मंगलवार का होना अशुभ होता है ऐसी स्थिति में दुर्भिक्ष आदि के द्वारा जनवर्ग पीड़ित होता है ॥ २३ ॥

गुरोर्गेहे यदा मन्दो मन्दगेहे यदा गुरुः।
तदा गुरु भयं लोके जगाद बादरायणः ॥ २४ ॥

अन्वयः—मन्दः यदा गुरोः गेहे, यदा गुरुः मन्द गेहे, तदा लोके गुरु भयं वादरायणः जगाद।

भाषा—यदि शनि बृहस्पति की राशि धनु या मीन में हो अथवा गुरु शनि की राशि मकर कुम्भ में हो तो जनवर्ग दुर्भिक्षादि द्वारा अत्यन्त कष्ट में रहता है ॥ २४ ॥

मीन-मेष-वृष-कन्यका-तुला वृश्चिकेषु रवयो यदा तदा।
यान्ति भूमिपतयो यमालयं क्षुद्भयाच्च परिपीड़िता जनाः ॥२५॥

अन्वयः—मीन-मेष-वृष-कन्यकातुला वृश्चिकेषु यदा रवयः तदा भूमिपतयः यमालयं यान्ति, जनाः क्षुद्भयाच्च परिपीड़िता भवन्तीत्यर्थः।

भाषा—यदि मीन, मेष, वृष, कन्या, तुला और वृश्चिक राशिगत सूर्य में पांच रविवार पड़े तो राजा मृत्यु को प्राप्त होता है और प्रजावर्ग दुर्भिक्षादि उपद्रवों से कष्ट पाता है ॥ २५ ॥

राहुर्मन्दो महीजो रविशशिभृगुभिर्वाक्पतिश्चंद्रपुत्रो,
यद्येते चैकराशौ ग्रहगणसहिता यस्य कस्यापि काले।
हाहाभूतं समस्तं पुरनगरलयं छत्रभङ्गं नृपाणां,
प्रालेयं भूमिकम्पं मनुजहतिकरं सर्वसंहारकारि ॥२६॥

अन्वयः—राहुः मन्दः, महीजः रविः शशिः भृगुः वाक्पतिः चन्द्रपुत्रः ग्रहगण सहिता यद्येते यस्य कस्यापि काले स्यातां तदा हाहाभूतं समस्तं पुरनगरलयं तथा नृपाणां छत्रभङ्गं, मनुजहतिकरं सर्वसंहारिकारि प्रालेयः भूमिकम्पश्च स्यात् ।

भाषा—राहु, शनि, मंगल, सूर्य, चन्द्रमा, शुक्र, गुरु और बुध जिस किसी समय भी यदि एक राशि में उपग्रहों के सहित हो जायँ तब गावँ नगर में हाहाकार मच जाता है राजाओं का राज्य भङ्ग होता है तथा मानव संहारकारक हिमपात तथा भूमिकम्प होता है ॥ २६ ॥

आखेटप्रश्नमाह—

सवीर्यौ कुजज्ञौ नृपाखेटसिद्धिर्यदा वीर्यहीनाविमौ नो तदाप्तिः ।
जलाखेटमाहुः सवीर्यैर्ग्रहर्क्षे जलाख्ये न योगे नगाखेटमाहुः[1] ॥

अन्वयः—यदा कुजज्ञौ सवीर्यौ नृपाखेटसिद्धिः (मृगयाविहारसिद्धिर्भवति)। यदा इमौ वीर्यहीनौ (खेट सिद्धिः) तदाप्तिः न । सवीर्यैः ग्रहर्क्षे जलाख्ये (जलचरराशिगते सति) जलाखेटमाहुः । न योगे नगाखेटं आहुः ।

भाषा—प्रश्न कालिक लग्न में यदि मंगल और बुध वलवान हों तो शिकार (आखेट) की सिद्धि होती है । यदि ये मंगल और बुध हीन वली हों तो आखेट नहीं मिलता । यदि वलवान ग्रह जलचरराशि में हों तो जलचरों का आखेट मिलता है वनचरराशियों में वनचर तथा पर्वतचारी राशियों में पर्वतीय प्रदेशों में होनेवाला आखेट प्राप्त होता है ॥ २७ ॥

भोजनचिन्ताप्रश्नः—

लग्नेशोऽन्नप्रदो ज्ञेयः सुखेशो भोज्यमीरितम् ।
बुभुक्षा मदपः कर्मपतिर्भोक्तेति चिन्तयेत्[2] ॥ २८ ॥

अन्वयः—लग्नेशोऽन्नप्रदो ज्ञेयः, सुखेशः भोज्यं इरितम् । मदपः बुभुक्षा तथा कर्मपतिः भोक्ता इति चिन्तयेत् ।

---

१. अथ मृगया विचारः—
सवीर्यो कुजज्ञौ नृपाखेटसिद्धयै न सिद्धिर्यदा वीर्यहीनाविमौ स्तः ।
जलाखेटमाहुः सवीर्यैर्ग्रहर्क्षैर्जलाख्यैर्नगाख्यैर्नगाखेटमाहुः ॥ ३४ ॥
ताजिकनीलकण्ठी वर्षतन्त्र ।

२. भोजनचिन्ताविचारमाह—
लग्नाधिपो भोज्यदाता सुखेशो भोज्यमीरितम् ।
बुभुक्षा मदपः, कर्मपतिर्भोक्तेति चिन्तयेत् ॥ ३६ ॥
ताजिकनीलकण्ठी वर्षतन्त्र ।

भाषा—लग्नेश अन्नदाता होता है। चतुर्थेश भोज्य (भोज्य पदार्थ) होता है। सप्तमेश क्षुधा (भूख) और कर्मेश भोक्ता अर्थात् अन्न भोजन करनेवाला होता है। इसके द्वारा ग्रहों का बलाबल ज्ञात कर अन्नदाता, भोज्य, भोक्ता तथा क्षुधा का ज्ञान करना चाहिए ॥ २८ ॥

[1]तिलान्नमर्के हिमगौ सतण्डुलं भौमे कुलत्थाश्चणकाश्च भोज्यम्।
बुधे समुद्गाः खलु राजमाषा गुरौ सगोधूमभुजिः स वीर्ये ॥२९॥
शुक्रे यवा वाज्यरिका युगंधराः शनौ कुलस्थादि समाषमन्नम्।
तुषान्नमन्नं शिखिराहु वीर्यौ शुभेक्षणालोकनतः सहर्षम् ॥३०॥

अन्वयः—अर्के सूर्ये सबले तिलान्नभुक्तम् अनेन भोक्षयितव्यं वा। एवं हिमगौ सतण्डुलं, भौमे कुलत्था, चणकाश्च भोज्यम्, बुधे समुद्गा राजमाषा, गुरौ स वीर्ये गोधूम भुजिः। शुक्रे यवा, वाज्यरिका युगंधराः, शनौ समाषं कुलत्थादि अन्नम्, शिखिराहुवीर्यौ तुषान्नमन्नं, शुभेक्षणालोकनतः, सहर्षं हर्षेण सहितं युक्तम्, अन्यथा हर्ष रहितं ज्ञेयमिति।

भाषा—प्रश्न कालिक लग्न में यदि सूर्य बलवान हो तो तिलान्न भोजन प्रश्न कर्त्ता किया है या करेगा। इसी प्रकार चन्द्रमा से तण्डुलान्न, मंगल से कुल्थी और चना, बुध से मूंग तथा मसूर, गुरु से गेहूँ, शुक्र से यव, बाजरा और जोन्हरी, शनि से ऊरद तथा कुल्थी एवं राहु केतु से तुषान्न (कोदो सांवा, टगुनी) भोजन

---

१. ग्रहभेदेन भोजनपदार्थभेदमाह :—

तिलान्नमर्के हिमगौ सुतण्डुलान्भौमे मसूराश्चणकाश्च भोज्यम्।
बुधे समुद्गः खलु राजमाषा गुरौ सगोधूम भुजिः सवीर्ये ॥ ४५ ॥
शुक्रे यवा बाजरिका युगन्धराः शनौ कुलित्थादि समाषमन्नम्।
भोज्यं तृणान्नं शिखिराहुवीर्याच्छुभेक्षणालोकनतः सहर्षम् ॥ ४६ ॥

ताजिकनीलकण्ठी वर्षतन्त्र ॥

सूर्ये मूलं पुष्पमिन्दौ कुजेस्यात्पत्रं शाखा चापि शाकं सवीर्ये।
शुक्रेज्यज्ञैर्व्यञ्जनं भूरिभेदं मन्देनेत्थं सामिषं राहुकेत्वोः ॥ ४७ ॥

अर्थात् रवि बलवान हो तो कन्दमूल (आलू, अरवी इत्यादि), चन्द्रमा बली हो तो फूल (सहिजन का फूल, कंचनार का फूल, अगस्त का फूल तथा फूलगोभी इत्यादि), मंगल बली हो तो शाकादि (पालक, चौराई इत्यादि) बुध शुक्र गुरु बली हों तो विविध फल व्यञ्जन, शनि राहु और केतु के बली होने पर सामिष (मांसयुक्त) भोजन प्राप्त होता है।

प्राप्त करता है। शुभग्रह की दृष्टि होने पर प्रसन्नतापूर्वक (या शोक से) तथा पापग्रहों के योग से लाचार होकर भोजन करता है ॥ २९-३० ॥

मेषे वृषे सिंहगते च रक्तो द्वन्द्वे स्त्रियां मीनहयोश्च पीतः ।
तुलालि कर्केषु च शुभ्रवर्णो मृगस्थिते कुम्भगते च कृष्णः ॥३१॥
रक्तचन्द्रे भवेद्युद्धं श्वेतचन्द्रेऽर्थनाशनम् ।
पीतचन्द्रे भवेत्सिद्धिः कृष्णचन्द्रे महाभयम् ॥ ३२ ॥

अन्वयः—मेषे वृषे सिंहगते च चन्द्रः रक्तः रक्तवर्णो भवेत्। एवं द्वन्द्वे, स्त्रियां मीनहयोश्च पीतः भवेत्। तुला-अलि कर्केषु च शुभ्रवर्णो, मृगस्थिते कुम्भगते च चन्द्रः कृष्णो भवेत्। तस्य फलम्—रक्तचन्द्रे युद्धं भवेत्, श्वेतचन्द्रे च अर्थनाशनम्। पीतचन्द्रे सिद्धिः भवेत्। कृष्णचन्द्रे महाभयम् भवेत्।

भाषा—मेष, वृष, और सिंह राशिगत चन्द्रमा रक्तवर्ण का, मिथुन कन्या, मीन और धनुराशि गत चन्द्रमा पीतवर्ण, तुला, वृश्चिक और कर्क राशिगत चन्द्रमा शुभ्रवर्ण तथा मकर और कुम्भ राशिगत चन्द्रमा कृष्णवर्ण का होता है। इसका फल इस प्रकार समझना चाहिए। यथा-रक्त चन्द्रमा में युद्धादिकार्य, श्वेत चन्द्रमा अर्थनाशक, पीत चन्द्रमा सिद्धि देनेवाला तथा कृष्ण चन्द्रमा महान् भयकारक होता है। विशेषकर यात्रा काल में विचार करना चाहिए ॥ ३१-३२ ॥

स्फुटार्थं चक्रम्

रक्तचन्द्र	पीतचन्द्र	श्वेतचन्द्र	कृष्णचन्द्र	वर्ण
मेष, वृष सिंह	मिथुन, धनु कन्या, मीन	तुला-वृश्चिक कर्कट	मकर, कुम्भ	राशि
युद्ध	धन लाभ सिद्धि	धननाश	महाभय	फलम्

प्रवासी जीवति न वा इतिप्रश्ने—

वारर्क्षतिथियोगास्तु घटिकाद्यादिकास्तथा ।
चैत्राद्या वातमासाश्च प्रवासी नामसंयुताः ॥ ३३ ॥
सप्तभिश्च हरेद्भागं शेषे चैव शुभाशुभम् ।
प्रथमे च द्वितीये च प्रवासी लाभसंयुतः ॥ ३४ ॥

तृतीये च चतुर्थे च प्रवासी कष्टतांगतः ।
पंचमें चापमृत्युश्च षष्ठे वै दीर्घरोगयुक् ॥ ३५ ॥
सप्तमे च भवेन्मृत्युः शारदावचनं यथा ॥ ३५½ ॥

अन्वयः—वार-ऋक्षः तिथियोगास्तु । तथा घटिकाद्यादिकाः । चैत्राद्यागत-मासा तथा प्रवासी नामसंयुताः । सप्तभिश्च हरेद्भागं शेषे च शुभा-शुभम् वाच्यम् । यथा-प्रथमे च द्वितीये च प्रवासी लाभसंयुतः इति वाच्यः । तृतीये चतुर्थे च प्रवासी कष्टतां गतः । पंचमे च अपमृत्युः । षष्ठे दीर्घरोगयुक् वैः इति निश्चयेन । सप्तमे मृत्युः च भवेत् यथा शारदावचनम् ।

भाषा—जिस समय प्रश्न कर्त्ता प्रश्न करे उस दिन की सूर्यादि क्रम गणना से दिन संख्या, नक्षत्र संख्या, तिथि संख्या, योग संख्या, इष्ट घटी संख्या, चैत्रादिगत-मास संख्या तथा प्रवासी के नामाक्षरों की संख्या इन सब का योग कर उसमें ७ का भाग देने से शेष तुल्य अङ्क के अनुसार फलादेश करना चाहिए । यथा १ और २ शेष में प्रवासी सकुशल है । ३ और ४ शेष में प्रवासी कष्ट में है ऐसा कहना चाहिए । ५ शेष में प्रवासी की अपमृत्यु, ६ शेष में दीर्घ रोग से पीडित तथा ७ शेष बचने पर प्रवासी की मृत्यु हो गई है ऐसा कहना चाहिए (सत्य होने पर भी कर्णकटु शब्दों को दैवज्ञ सीधे न कह कर घुमा फिरा कर कहे) ॥३३-३५॥

विवाहे सर्वमाङ्गल्ये यात्रायां ग्रहगोचरे ।
जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत् ॥ ३६ ॥

अन्वयः—विवाहे, सर्वमाङ्गल्ये यात्रायां ग्रहगोचरे जन्मराशेः प्रधानत्वं अतः नामराशिं न चिन्तयेत् ।

भाषा—विवाह में शुभाशुभ ज्ञान के लिए, सभी उपनयनादि माङ्गलिक कार्यों में, यात्रा में तथा गोचरग्रह फल विचार में, जन्मराशि (राशिनाम) की ही प्रधानता होती है । इसमें नामराशि (पुकार नामराशि) का विचार नहीं करना चाहिए ॥ ३६ ॥

देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके ।
नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत् ॥ ३७ ॥

अन्वयः—देशे, ग्रामे, गृहे, युद्धे, सेवायां, व्यवहारके च नामराशेः प्रधानत्वं बोध्यम् । जन्मराशिं न चिन्तयेत् ।

भाषा—देश-ग्राम-या गृहप्रवेश में, युद्ध में सेवाकर्म (नौकरी) में अन्य सभी व्यवहार कार्यों में नामराशि ही मुख्य है, जन्मराशि नहीं ॥ ३७ ॥

काकिन्यां वर्गशुद्धौ च वादे द्यूते स्वरोदये ।
कण्ठे पुनर्भूवर्णे च नामराशेः प्रधानता ॥ ३८ ॥

अन्वयः—काकिन्यां, वर्गशुद्धौ, वादे, द्यूते, स्वरोदये च तथा कण्ठे पुनर्भूवरणे च नामराशेः प्रधानता ज्ञेया ।

भाषा - काकिणी विचार, वर्ग शुद्धि, वादविवाद. जूआ, स्वरोदय, संगीत तथा पुनर्भूवरण (विधवा विवाह) में नामराशि को ही प्रधान समझना चाहिए ॥३८॥

रविर्नृपविलोकने सुरगुरुर्विवाहोत्सवे
रणे धरणिनन्दनो भृगुसुतः प्रयाणे बली ।
शनिश्च भृतिलक्षणे निखिलशास्त्रबोधे बुधः
शशी सकलकर्मसु ध्रुवमुदाहृताः सूरिभिः ॥ ३९ ॥

अन्वयः—नृपविलोकने (राज्ञां दर्शने) रविः सूर्यो श्रेष्ठो भवति, विवाहोत्सवे सुरगुरुः, रणे युद्धे धरणिनन्दनः, प्रयाणे भृगुसुतः, भृत्यकर्मणि शनैश्चरो बली ग्राह्यः । निखिलशास्त्र बोधे बुधोग्राह्यः । शशी सर्वकार्येषु श्रेष्ठो भवति । सूरिभिः ध्रुवमुदाहृता ।

भाषा—राजा के दर्शन या राज्य कार्य में सूर्य का बल देखना चाहिए । विवाहादि में गुरु, युद्ध में मङ्गल, यात्रा में शुक्र, भृत्यकर्म (नौकरी) में शनि, शास्त्र ज्ञान में बुध तथा चन्द्रमा के बल का विचार प्रायः सभी शुभ कर्मों में करना उत्तम होता है ॥ ३९ ॥

इति प्रश्नानुगग्रन्थो जगच्चिन्तानिवारणः ।
चण्डेश्वराभिधः प्रोक्तो जगदानन्दकारकः ॥ ४० ॥

श्री मन्महामहोपाध्याय श्रीदैवज्ञरामकृष्णविरचिते प्रश्नचण्डेश्वराभिधे
युद्धप्रश्नादिविचाराध्यायः सप्तमः ॥ ७ ॥

अन्वयः—इति (पूर्वोक्तं) प्रश्नानुग (प्रश्नाभिधः) जगच्चिन्तानिवारणः लोकानां चिन्तान्धकारस्य नाशकः ग्रन्थः चण्डेश्वराभिधः चण्डेश्वरनामकः जगदानन्दकारकः प्रोक्तः ।

भाषा—उपरोक्त प्रश्न सम्बन्धी ज्ञान द्वारा जगत् की चिन्ता रूपी अन्धकार को दूर करने में सूर्य किरणों की भाँति प्रशस्त तथा संसार को आनन्द देनेवाला यह प्रश्न चण्डेश्वर नामक ग्रन्थ कहा गया ॥ ४० ॥

अथ प्रकीर्णकाध्यायः

नक्षत्राणां स्वामिशुभाशुभादिविशेषसंज्ञा

नक्षत्राणि	स्वामिनः	शुभाशुभ	जातयः	संज्ञा	मुखम्.	घ. ऊ. ने.	दोहदम्
अश्विनी	अश्विनीकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. क्षि.	तिर्यक्	५०	तिलतण्डुलं
भरणी	यमः	नाशकः	चाण्डालः	उ. क्रू.	अधः	२४	साक्षतमाषः
कृत्तिका	अग्निः	अशुभम्	ब्राह्मणः	मि. सा.	अधः	३०	माषः
रोहिणी	ब्रह्मा	शुभम्	शूद्रः	ध्रु. स्थि.	ऊर्ध्वम्	४०	गव्यम्
मृगशिरा	चन्द्रः	शुभम्	कृषकः	मृदु. मै.	तिर्यक्	१४	गोघृतम्
आर्द्रा	शिवः	अशुभम्	क्रूरजातिः	ती. दा.	ऊर्ध्वम्	२१	दुग्धम्
पुनर्वसु	अदितिः	शुभम्	वैश्यः	च. च.	तिर्यक्	३०	हरिणमांसम्
पुष्य	गुरुः	शुभम्	क्षत्रियः	ल. क्षि.	ऊर्ध्वम्	२०	मृगारक्तम्
आश्लेषा	सर्पः	अशुभम्	चाण्डालः	ती. दा.	अधः	३२	पायसम्
मघा	पितरः	शोकदः	शूद्रः	उग्र क्रूर	अधः	३०	चाषमांसम्
पू. फा.	भगः	अशुभम्	ब्राह्मणः	उग्र क्रूरः	अधः	२०	मृगमांसम्
उ. फा.	अर्यमा	शुभम्	क्षत्रियः	ध्रु. स्थि.	ऊर्ध्वम्	१८	शशकमांसम्
हस्त	रविः	शुभम्	वैश्यः	ल. क्षि.	तिर्यक्	२१	साठीः
चित्रा	त्वष्टा	शुभम्	कृषकः	मृ. मै.	तिर्यक्	२०	प्रियंगुः
स्वाती	वायु	शुभम्	क्रूरजातिः	च. च.	अधः	१४	अपूपः
विशाखा	इन्द्राग्नि	अशुभम	चाण्डालः	मि. सा.	अधः	१४	नानापक्षिम्
अनुराधा	मित्रः	शुभम्	शूद्रः	मृ. मै.	तिर्यक्	१०	सत्फलम्
ज्येष्ठा	इन्द्रः	शुभम्	कृषकः	ती. दा.	तिर्यक्	१४	कूर्ममांसम्
मूल	राक्षसः	क्षयः	क्रूरजातिः	ती. दा.	अधः	५६	सारिकमांसम्
पू. षा.	जलः	हानिः	ब्राह्मणः	उ. क्रू.	अधः	२४	गोधिकमांसम्
उ. षा.	विश्वेदेवाः	हानिः	क्षत्रियः	ध्रु. स्थि.	ऊर्ध्वम्	१०	शल्यमांसम्
श्रवण	विष्णुः	वृद्धि	चाण्डालः	च. च.	ऊर्ध्वम्	१०	कृशरान्नम्
धनिष्ठा	वसुः	शुभम्	कृषकः	च. च.	ऊर्ध्वम्	१०	मुद्गमोदकम्
शतभिषा	वरुणः	शुभम्	क्रूरजातिः	च. च.	ऊर्ध्वम्	१८	यवपिष्टम्
पू. भा.	अजैक	अशुभम्	ब्राह्मणः	उ. क्रू.	ऊर्ध्वम्	१६	मत्स्यान्नम्
उ. भा.	अहिर्बु.	शुभम्	क्षत्रियः	ध्रु. स्थि.	ऊर्ध्वम्	२४	चित्रितान्नम्
रेवती	पूषा.	शुभम्	शूद्रः	मृ. मै.	तिर्यक्	१०	दध्योदनम्

नक्षत्राणि	अथज्वरादिरोगोत्पत्तौ		भस्यपादवशादत्र दिनसंख्या				
	दिनं सं.	दानादि	१च	२च	३च	४च	जपार्थं मन्त्राः
अश्विनी	दिनं ९	भोजनदानम्	९	११	१०	२०	मृत्युञ्जयमन्त्रजपः
भरणी	दिनं ११	गोत्रादिदानम्	०	८०	४०	११	यमायत्वेति मन्त्रः
कृत्तिका	दिनं ९	स्वर्णदानम्	९	११	१६	२८	अग्निमूर्धेति मन्त्रः
रोहिणी	दिनं ७	घृतदानम्	३	९	१८	३०	ब्रह्मयेति मन्त्रः
मृगशिरा	मासः १	तिलदानम्	९	५	७	१०	इमं देवेति मन्त्रः
आर्द्रा	मृतिः	गोदानम्	०	१८	०	०	नमस्तेरुद्रइति मन्त्रः
पुनर्वसु	दिनं ७	पीतलदानम्	७	१४	२	२१	अदितिद्यौरितिमन्त्रः
पुष्य	दिनं ७	तैलान्नदानम्	६	७	१०	२१	बृहस्पतेति मन्त्रः
आश्लेषा	मृतिः	गोऽजादिदानम्	०	०	४१	०	नमस्तुसर्पेति मन्त्रः
मघा	दिनं २०	वस्त्राज्यदानम्	१५	७	१७	२०	पितृभ्यइति मन्त्रः
पू. फा.	मृतिः	भोजनदानम्	०	१५	०	३०	भगप्रणेति मन्त्रः
उ. फा.	दिनं ७	अन्नदानम्	७	१४	७	६०	दध्यावद्धेति मन्त्रः
हस्त	दिनं १५	तैलदानम्	१५	१७	१५	०	उदुत्यंजातवेदेति मन्त्रः
चित्रा	दिनं ११	दुग्धदानम्	११	९	९	१६	त्वष्टातुरीयेति मन्त्रः
स्वाती	मृतिः	गोघृतदानम्	६०	१७	३०	०	वायोरग्नेति मन्त्रः
विशाखा	दिनं १६	गोस्वर्णदानम्	१५	०	४	१३	इन्द्राग्नी इति मन्त्रः
अनुराधा	स्थिरः	गोघृतदानम्	६०	१२	३६	३०	नमोमित्रेति मन्त्रः
ज्येष्ठा	मृतिः	तिलदानम्	६९	९	६	४	त्रातारमिन्द्रे मन्त्रः
मूल	घटी ९	रौप्यपात्रदानम्	०	९	१५	६	मातापुत्रेति मन्त्रः
पू. षा.	मृतिः	गोमुक्तादानम्	०	१५	२४	१०	आपोधर्मेति मन्त्रः
उ. षा.	मासः १	भोजनदानम्	३०	२४	२६	१६	विश्वेदेवेति मन्त्रः
श्रवण	दिनं ११	श्रीफलदानम्	६०	२४	६	९	विष्णोररा. मन्त्रः
धनिष्ठा	दिनं १५	अश्वान्नदानम्	१५	४	२०	२१	. वसोःपवित्रेति मंत्रः
शतभिषा	दिनं ११	भोजनान्नदानम्	०	४५	३	२२	वरुणस्तम्भेति मंत्रः
पू.भा.प.	मृतिः	भोजनदानम्	०	१२	२१	१९	अहिर्बुध्नेति मंत्रः
उ.भा.प.	दिनं ७	अन्नदानम्	१०	३	९	१५	अहिर्बुध्न्येति मंत्रः
रेवती	स्थिर	वृषदानम्	१८	१०	९	२०	पूषन्तवव्रेति मंत्रः

नष्टवस्तुज्ञानाय सुलोचनादिसंज्ञा

नक्षत्राणि	संज्ञा	दिशा	लाभाऽलाभ	ता.	स्वरूपाणि
अश्विनी	मंद	द	यत्नलाभः	३	अश्वमुखम्
भरणी	मध्य	प	दूरेश्र.	३	योनिस्वरूपम्
कृत्तिका	सुलो.	उ	अलाभः	६	क्षुरकाकृतिः
रोहिणी	अन्ध	पू	शीघ्रला.	५	शकटवत्
मृगशिरा	मंद	द	यत्नला.	३	मृगास्यम्
आर्द्रा	मध्य	प	दूरेश्र.	१	मणिसदृशम्
पुनर्वसु	सुलो.	उ	अलाभः	४	गृहसदृशम्
पुष्य	अन्ध	पू	शीघ्रला.	३	वाणाकृतिः
आश्लेषा	मंद	द	यत्नला.	५	चक्राकारम्
मघा	मध्य	प	दूरेश्र.	५	गृहसदृशम्
पू. फा.	सुलो.	उ	अलाभः	२	मंचकाकृतिः
उ. फा.	अन्ध	पू	शीघ्रला.	२	खट्वाकारम्
हस्त	मंद	द	यत्नला.	५	हस्ताकारम्
चित्रा	मध्य	प	दूरेश्र.	१	मौक्तिकम्
स्वाती	सुलो.	उ	अलाभः	१	प्रवालाकारम्
विशाखा	अन्ध	पू	शीघ्रला.	४	तोरणकारम्
अनुराधा	मन्द	द	यत्नला.	४	बलिसदृशम्
ज्येष्ठा	मध्य	प	दूरेश्र.	४	कुण्डलाकृति
मूल	सुलो.	उ	अलाभः	३	सिंहपुच्छदन्
पू. षा.	अन्ध	पू	शीघ्रला.	११	गजदंतसमम्
उ. षा.	मन्द	द	य. ला.	२	मचकसदृशम्
श्रवण	सुलो.	उ	अ. ला.	३	विमानसदृशम्
धनिष्ठा	अन्ध	पू	शी. ला.	४	मृदङ्गाकृतिः
शतभिषा	मन्द	द	य. ला.	१००	वर्तुलम्
पू.भा.प.	मध्य	प	दूरेश्र.	२	मचकाकारम्
उ.भाप.	सुलो.	उ	अलाभः	२	यमलसदृशम्
रेवती	अन्ध	पू	शी. ला.	३२	मर्दलाकारम्

रोगार्त्तस्येष्टकालवशाद्बाधाज्ञानम्—

तिथिवारश्च नक्षत्रं लग्नं यामं च संयुतम् ।
वसुभिस्तु हरेद्भागं शेषे बाधा नियोजयेत् ॥ १ ॥
हयेग्नौ देव बाधा स्यात् पितरौ नेत्रदन्तिनः ।
षट्चतुर्थे भूतबाधा ग्रहाणामेकपंचके ॥ २ ॥

भाषा—प्रश्नकालीन तिथि संख्या, दिन संख्या, नक्षत्र संख्या, लग्न संख्या और प्रहर संख्या का योग कर आठ से भाग देने पर यदि ७ और ३ शेष बचे तो देवबाधा से कष्ट हो रहा है ऐसा कहना चाहिए । इसी प्रकार २ और ८ शेष बचने पर पितरों के दोष से, ६ और ४ शेष बचने पर भूतबाधा, १ और ५ शेष बचने पर ग्रहदोषजन्य कष्ट रोगी को है ऐसा फलादेश कहे ॥ १–२ ॥

भक्ते द्वादशभिः शेषे जीवनं मरणं वदेत् ।
रामबाणरसाष्टौ च नन्दरुद्राश्च जीवति ॥ ३ ॥
एकः पक्षो युगः सप्त दशार्कोनात्र जीवति ॥ ३३ ॥

भाषा—उपरोक्त श्लोक संख्या १ के अनुसार योग संख्या में १२ का भाग दे, यदि (३, ५, ६, ८, ९, ११) शेष बचे तो रोगी कष्ट सह कर रोग मुक्त होगा और यदि शेष १, २, ४, ७, १०, १२ बचे तो रोगी के बचने की सम्भावना कम होती है ।

राजमार्त्तण्डे यथा—

वारर्क्षं च तिथिर्दिशा परिमितं संयोज्यनागैर्भजेत्
शेषाङ्केन फलं च नाग८नयने२दोषं पितुश्चान्यथा ।
सप्ते७राम३मिते सुरस्यविहितं तर्का६क्ष५वेदे४तथा,
प्रेतस्यापि च खेचरस्य विदितं चन्द्रे च बाणाधिके ॥ ४ ॥

भाषा—वार, नक्षत्र, तिथि और दिशा की संख्याओं का योग कर ८ का भाग दे । यदि शेष ८ और २ बचे तो पितरों के प्रकोप से कष्ट कहे, ७, ३ शेष बचे तो देवबाधाजन्य कष्ट, ६, ५, ४ शेष बचे तो प्रेत बाधा तथा १ शेष बचे तो ग्रहदोषजन्य कष्ट कहना चाहिए ॥ ४ ॥

लब्धाङ्कं त्रिगुणं तथा वसुयुतं वेदेन गुण्यं ततः,
सप्तासेऽत्रधिकं यथा विघुमितं कौल्यं च दोषं वदेत् ।

ग्राम्यं वन्यभवं च राजकुलजं स्याच्छत्रुजं पंक्तिजं,
शून्ये व्योमभवं तथास्य विविधोपायैश्च शान्ति वदेत् ॥ ५ ॥

भाषा—उपरोक्त श्लोक संख्या ४ के अनुसार योग संख्या में ३ से गुणा कर ८ जोड़ दें तथा पुनः ४ का गुणा कर ७ से भाग देने पर यदि १ शेष बचे तो कुल दोष, २ शेष में ग्राम्य दोष, ३ शेष में वन्य दोष, ४ शेष में राजकुलजन्य दोष, ५ शेष में शत्रुदोष, ६ शेष में पंक्तिजन्य दोष और ० शेष में आकाशजन्य दोष से कष्ट कहना चाहिए। जिसका उपचार आगे के श्लोक में कहा गया है ॥५॥

कौल्यं होमद्विजार्चनैः शुभकरं वाच्यं चतुष्कोणके।
होमैः वन्यभवेऽतिथिवरभवैर्भोज्यैश्च वस्त्रेण वा।
राज्ये तीर्थपदे, तथाप्यरिकुले शक्तिक्रियादानतो,
गायत्री जपतो हि पंक्तिविषये चाकाशजो दीपतः ॥ ६ ॥

भाषा—कुलजन्य दोष की शान्ति हवन तथा विप्रपूजन से होती है अर्थात् शुभकारक होता है। ग्राम्यदोष चतुष्कोण में हवन से (वास्तु शान्ति या वास्तु कीलन)। वन्यजन्य कष्ट उत्तम भोजन पदार्थ एवं वस्त्र से अतिथि पूजन करने से राज्यदोष में उपरोक्त कार्य तीर्थ स्थान में करे। शत्रुजन्य पीड़ा शान्ति के लिए यथाशक्ति दान या शक्तिपूर्वक कर्त्तव्य पालन से। पँक्ति दोष गायत्री जप से तथा आकाश दोष में आकाश दीप दान से दोष दूर होता है।

शीघ्र रोग विमुक्ति के लिए उपचार—

ऋक्षेशरूपं कनकेन कृत्वा तल्लिङ्गमन्त्रैश्च सुगन्धिपुष्पैः।
वस्त्राक्षतैर्गुग्गुलधूपदीपनैवेद्यताम्बूलफलैश्च सम्यक्॥
पूजां च कृत्वाऽऽमयनाशनाय द्विजाय दद्यादतुलं शिवाय ॥

इति वशिष्ठः

भाषा—जिस नक्षत्र में कष्ट आरम्भ हुआ हो उस नक्षत्र के स्वामी की मूर्ति सोने की बनाकर उसी के मन्त्र से सुगन्धित पुष्प वस्त्राक्षतादि से पंचोपचार या षोडशोपचार विधिवत पूजन कर रोग नाश के लिए तथा कल्याण के लिए दक्षिणा के सहित मूर्ति का दान किसी योग्य ब्राह्मण को दे दे।

रोगी की शीघ्र मृत्यु का योग—

रौद्राहिशाक्राम्बुपयाम्यपूर्वाद्विदैववस्वग्निषु पापवारे।
रिक्ता हरिस्कन्ददिने च रोगे शीघ्रं भवेद्रोगिजनस्य मृत्युः ॥

आर्द्रा, आश्लेषा, ज्येष्ठा, शतभिषा, भरणी, तीनों पूर्वा, विशाखा, धनिष्ठा और

कृत्तिका इन नक्षत्रों में सूर्य, मंगल, शनि के दिन ४,९,१४,६,१२ तिथियों में अर्थात् उक्त वार नक्षत्र तथा तिथियों का योग होने पर यदि रोग आरम्भ हो तो रोगी की शीघ्र मृत्यु होती है। वशिष्ठ के मत से स्वाती, ज्येष्ठा, तीनों पूर्वा, आर्द्रा और आश्लेषा इनमें किसी भी नक्षत्र में यदि चन्द्रतारा दुर्बल हो तो रोगी की शीघ्र मृत्यु होती है।

सद्यःवृष्टिलक्षणम्—

वर्षा प्रश्ने सलिलनिलयं राशिमाश्रित्य चन्द्रो-
लग्नं यातो भवति यदि वा केन्द्रगः शुक्लपक्षे।
सौम्यैर्दृष्टः प्रचुरमुदकं पापदृष्टोल्पमम्भः
प्रावृट्काले सृजति न चिराच्चन्द्रवद्भार्गवोऽपि॥ १॥

भाषा—प्रश्नकालिक लग्न चक्र में यदि चन्द्रमा जलचर राशि ४,११,१२,६ और १० के उत्तरार्द्ध में होकर लग्न या केन्द्र में शुभग्रहों से दृष्ट हो तो उत्तम वर्षा होवे। यदि पाप ग्रहों से देखा जाता हो तो थोड़ी वर्षा हो और बहुत दिनों तक वर्षा न हो। शुक्र भी चन्द्रमा के समान फल देता है॥ १॥

आर्द्रं द्रव्यं स्पृशति यदि वा वारि तत्संज्ञकं वा,
तोयासन्नो भवति यदि वा तोयकार्योन्मुखं वा।
प्रष्टा वाच्यः सलिलमचिरादस्ति निःसंशयेन,
पृच्छाकाले सलिलमिति वा श्रूयते यत्र शब्दः॥ २॥

भाषा—प्रश्नकर्त्ता जिस समय प्रश्न करे उस समय यदि वह गीले पदार्थ का स्पर्श करे, जल का स्पर्श करे या जल सूचक पदार्थ का स्पर्श करे या जल के आस-पास प्रश्न करे या जल के लिए जाते समय प्रश्न करे तो शीघ्रवर्षा होगी ऐसा कहना चाहिए। अथवा प्रश्नकर्त्ता से अतिरिक्त कहीं से जल शब्द सुनाई पड़े या प्रश्नकर्त्ता उर्ध्वमुख हो प्रश्न करे तो भी शीघ्र वृष्टि होगी, ऐसा उत्तर देना चाहिए।

उदयशिखरिसंस्थो दुर्निरीक्ष्योऽतिदीप्त्या-
द्रुतकनकनिकाशः स्निग्धवैडूर्यकान्तिः।
तदहनि कुरुतेऽम्भस्तोयकाले विवस्वान्
प्रतपति यदि चोच्चैः खंगतोऽतीवतीक्ष्णम्॥ ३॥

भाषा—यदि वर्षाकाल में किसी दिन सूर्योदय के समय अपनी कान्ति से सूर्य दृष्टिगोचर न हों या अतिकष्ट हो अथवा पिघले हुए स्वर्ण या वैडूर्यमणि के समान

स्निग्ध वर्ण हों तो उस दिन वृष्टि होगी। अथवा मध्याह्न में अति तीक्ष्ण कान्ति हो तो उस दिन वृष्टि हो—ऐसा कहना चाहिए ।। ३ ।।

प्रावृषि शीतकरो भृगुपुत्रात् सप्तमराशिगतः शुभदृष्टः ।
सूर्यसुतान्नवपंचमगो वा सप्तमगश्च जलागमनाय ।। ४ ।।

भाषा—वर्षाकालीन प्रश्न के लग्नचक्र में यदि चन्द्रमा शुक्र से सप्तम राशि में या शनि से नवम, पंचम या सप्तम राशि में शुभग्रहों से देखा जाय तो शीघ्र जल होता है ।। ४ ।।

अग्रतः पृष्ठतो वापि ग्रहाः सूर्यावलम्बितः ।
यदा तदा प्रकुर्वन्ति महीमेकार्णवामिव ।। ५ ।।

भाषा—जब सभी ग्रह आगे या पीछे सूर्यावलम्बी हो जायं तो पृथ्वी जल वर्षण से समतल दृष्टिगोचर होवे। अर्थात् जल पूर्ण भूमि की ऊँचाई-निचाई का पता न चले अर्थात् पृथ्वी समुद्रवत् दृष्टिगोचर हो ॥ ५ ॥

वर्षाज्ञानार्थं सप्तनाड़ी चक्रम्

शनिः	रविः	भौमः	गुरुः	शुक्रः	बुधः	चन्द्रः	पतयः
कृति-	रो.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	श्लेषा	मानि
विशा.	स्वा.	चि.	हस्त	उ. फा.	पू. फा.	मघा	,,
अनु	ज्ये.	मू	पू. षा.	उ. षा.	अभि.	श्रवण	,,
भ.	अश्वि	रे.	उ. भा.	पू. भा.	शत	धनि	,,
चंडा	वात	वह्नि	सौम्य	नीर	जल	अमृत	ना.ना.

अश्विन्यादित्रिकं चैव शिवादीनां च पञ्चकम् ।
पूर्वाषाढ़ाचतुष्कं च पूभापूषाऽभिसंयुतम् ।।
एतानि शक्रतुल्यानि ऋक्षाणि शशिनः कृते ।
शेषाणि सूर्यभान्येव प्रकथ्यन्ते पुरातनैः ।।

चन्द्रनक्षत्राणि—अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़, अभिजित्, श्रवण, पूर्वाभाद्रपदा, रेवती।

सूर्ये नक्षत्राणि—रोहिणी, मृगशिरा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, धनिष्ठा, शतभिषा, उत्तराभाद्रपदा।

वर्षा ज्ञान के लिए उपरोक्त नक्षत्रों तथा चन्द्रादि नाड़ियों के आधार पर विचार करना चाहिए। यदि सूर्य चन्द्रमा के नक्षत्र में और चन्द्रमा सूर्य के नक्षत्र में हो तो वृष्टि होती है। यदि चन्द्रमा और सूर्य दोनों चन्द्र नक्षत्र में हों तो स्वल्प-दृष्टि और दोनों ही यदि सूर्य के नक्षत्र में हों तो अनावृष्टि होती है। साथ ही सूर्यादिग्रह यदि चण्डावात और वह्नि नाडी में हों तो आँधी आवे, ओले पड़ें या उपद्रव हो तथा यदि सूर्यादि ग्रह वीर, सौम्य जल और अमृतनाड़ी में हों तो उत्तम वृष्टिदायक होते हैं।

यो यो भावः स्वामिदृष्टः युतो वा सौम्यैर्वा तस्य तस्यास्ति वृद्धिः।
पापैरेवं तस्य भावस्य हानिर्निर्देष्टव्या पृच्छता जन्मतो वा ॥१॥

भाषा—प्रश्न लग्न से या जन्म लग्न से जो भाव (तनु धनादि १२ भावों में) अपने स्वामी या शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट हों, उन उन भावों की वृद्धि होती है और जिन-जिन भावों पर पापग्रह हों या उन पर पापग्रहों की दृष्टि पड़ती हो उन-उन भावों की हानि होती है। इस प्रकार प्रश्न के फल वतलाने के पहले प्रश्न या जन्म लग्न से भावों के शुभग्रहों या पापग्रहों के साथ तथा दृष्टि का ज्ञान पहले कर लेना चाहिए ॥ १ ॥

लग्नपतिर्यदि लग्नं कार्याधिपतिश्च वीक्षते कार्यम्।
लग्नाधीशः कार्यं कार्येशः पश्यति विलग्नम् ॥ २ ॥
लग्नेशः कार्येशं कार्येशः पश्यति विलग्नम्।
शीतगुदृष्टौ परिपूर्णा कार्यसंसिद्धिः ॥ ३ ॥

भाषा—लग्नेश लग्न को या कार्य का स्वामी कार्य को, लग्नेश कार्य को या कार्येश लग्नको, लग्नेश कार्येश को या कार्येश लग्नेश को देखे और लग्नेश और कार्येश इन दोनों को चन्द्र देखता हो तो प्रश्न कर्त्ता के कार्य में पूरी सिद्धि मिलती है ॥ २–३ ॥

सौम्यं विलग्ने यदि वा स्ववर्गे शीर्षोदये सिद्धिमुपैति कार्यम्।
अतो विपर्यस्तमसिद्धि हेतुः कृच्छ्रेण संसिद्धिकरं विमिश्रम् ॥

भाषा—लग्न में शुभग्रह हो या लग्न में शुभग्रह का वर्ग हो तो लग्न शीर्षोदय राशि (मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुम्भ) में से कोई हो तो कार्य की सिद्धि होती है, किन्तु इसके विपरीत होने से कार्य की हानि होती है। यदि पाप और शुभ दोनों लग्न युक्त या दृष्ट हों तो कठिनाई से कार्य में सफलता मिलती है ॥ ४ ॥

चरे लग्ने चरे सूर्ये चरराशौ शशी भवेत् ।
तदा सिद्धिः फलान्नूनं वक्तव्या गणकोत्तमैः ॥ ५ ॥

भाषा—चर (मेष, कर्क, तुला, मकर) लग्न में प्रश्न हो तथा चर राशि में सूर्य और चन्द्रमा रहें तो प्रश्न के फल की सिद्धि होती है ॥ ५ ॥

चरे लग्ने चरे सूर्ये स्थिरराशौ यदा शशी ।
तदा सिद्धि न वक्तव्या अनर्थं च भविष्यति ॥ ६ ॥

भाषा—यदि चर लग्न में प्रश्न हो और चर राशि में सूर्य रहे किन्तु स्थिर राशि (वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ) में चन्द्रमा हो तो प्रश्न के फल की सिद्धि नहीं होती बल्कि अनिष्ट होता है ॥ ६ ॥

चरे लग्ने चरे सूर्ये द्विःस्वभावे च चन्द्रमाः ।
बन्धनं द्रव्यनाशं च चित्तोद्वेगश्च कारयेत् ॥ ७ ॥

भाषा—यदि चर लग्न में प्रश्न हो और चर राशि में सूर्य हो किन्तु द्विस्वभाव राशि (मिथुन, कन्या धन, मीन) राशि में चन्द्रमा हो तो द्रव्य का नाश होता है तथा चित्त में उद्वेग होता है ॥ ७ ॥

चरे लग्ने स्थिरे सूर्ये चरराशौ यदा शशी ।
नष्टलाभं धनं धान्यं वृद्धिभावं करोति वै ॥ ८ ॥

भाषा—यदि चर लग्न में प्रश्न हो और स्थिर राशि में सूर्य हो किन्तु चन्द्रमा चर राशि में हो तो नष्ट धन और धान्य की वृद्धि बताना चाहिए ॥ ८ ॥

चरे लग्ने स्थिरे सूर्ये स्थिरे लग्ने च चन्द्रमा ।
कार्यनाशं च सौख्यं च विग्रहश्च भविष्यति ॥ ९ ॥

भाषा—यदि चर लग्न में प्रश्न हो किन्तु सूर्य और चन्द्रमा स्थिर राशि में हों तो कार्य नाश, सुखहानि और विग्रह होता है ॥ ९ ॥

चरे लग्ने स्थिरे सूर्ये द्विःस्वभावे च चन्द्रमाः ।
क्षेमं सौख्यं चेष्टसिद्धिः पुत्रवृद्धिः धनागमः ॥ १० ॥

भाषा—यदि चर लग्न में प्रश्न, स्थिर राशि में सूर्य और द्विस्वभाव राशि में चन्द्र हो तो अभीष्ट सिद्धि, सौख्य, पुत्र वृद्धि और धन-धान्य का आगमन होता है ॥ १० ॥

चरे लग्ने द्विःस्वभावेऽर्के चरे वा चन्द्र एव च ।
बन्धनं च महारोगं महत् कष्टं महाभयम् ॥ ११ ॥

भाषा—यदि चर लग्न में प्रश्न हो, द्विस्वभाव में सूर्य हो और चर राशि में चन्द्रमा रहे तो बन्धन, महारोग, महान कष्ट और महाभय कहना चाहिए ॥ ११ ॥

चरे लग्ने द्विःस्वभावेऽर्के स्थिरराशौ गतः शशी ।
मध्यचिन्ता विजानीयात् फलसिद्धिर्न दृश्यते ॥ १२ ॥

भाषा—यदि चर लग्न में प्रश्न हो, द्विःस्वभाव राशि में सूर्य हो और स्थिर राशि में चन्द्र रहे तो मध्यम प्रकार की चिन्ता होती है और कार्य के फल को सफलता नहीं मिलती ॥ १२ ॥

चरे लग्ने द्विःस्वभावेऽर्के द्विःस्वभावे च चन्द्रमाः ।
न च सिद्धि विजानीयात् भयमुद्वेगता भवेत् ॥ १३ ॥

भाषा—यदि चर लग्न में प्रश्न हो और द्विःस्वभाव राशि में सूर्य और चन्द्रमा रहे तो प्रश्न फल सिद्ध नहीं होता अपितु भय और उद्वेग होता है ॥ १३ ॥

इति चर लग्न फलम् ।

स्थिरे लग्ने स्थिरे सूर्ये चरभे चन्द्र एव च ।
सर्वसिद्धि भवेत् कार्यं विजयं भयनाशनम् ॥ १४ ॥

भाषा—यदि स्थिर लग्न में प्रश्न हो और स्थिर लग्न में सूर्य हो किन्तु चर लग्न में चन्द्रमा हो तो सब कार्य की सिद्धि, विजय और भय का नाश बताना चाहिए ॥ १४ ॥

स्थिरे लग्ने स्थिरे सूर्यः चन्द्रमाः स्थिर एव च ।
सर्वकार्यं भवेत् सिद्धिः धनं धर्मः प्रवर्तते ॥ १५ ॥

भाषा—यदि स्थिर लग्न में प्रश्न हो तथा सूर्य और चन्द्रमा भी स्थिर राशि मे हों तो सब काम की सिद्धि होती है, एवं धन और धर्म भी होता है ॥ १५ ॥

स्थिरे लग्ने स्थिरे सूर्ये. द्विःस्वभावे निशापतौ ।
राज्यपूज्यैश्च लाभश्च धर्मकार्यं महोत्सवम् ॥ १६ ॥

भाषा—यदि स्थिर लग्न में प्रश्न हो, तथा स्थिर राशि में सूर्य किन्तु द्विस्वभाव राशि में चन्द्रमा के रहने पर राजपूजित जन से लाभ, धर्म कार्य और महोत्सव होता है ॥ १६ ॥

स्थिरे लग्ने चरे सूर्ये द्विःस्वभावे कलानिधौ ।
द्विपदे चतुष्पदे हानिः व्याधिभीश्च भवेत् ध्रुवम् ॥ १७ ॥

भाषा—यदि स्थिर लग्न में प्रश्न हो, चर राशि में सूर्य और द्विस्वभाव राशि में चन्द्रमा हो तो द्विपद (मनुष्य), चतुष्पद को हानि तथा निश्चय व्याधि का भय होता है ॥ १७ ॥

स्थिरे लग्ने चरे सूर्ये चरराशौ यदा शशी ।
सिद्धिं सौख्यं तदोद्वेगं ऋद्धिं च कुरुते ध्रुवम् ॥ १८ ॥

भाषा—यदि स्थिर लग्न में प्रश्न हो और चर राशि में सूर्य और चन्द्रमा दोनों हों तो कार्य की सिद्धि, सौख्य, मानसिक उद्वेग और निश्चय ही सम्पत्ति होती है ॥ १८ ॥

स्थिरे लग्ने चरे सूर्ये स्थिरे चन्द्रे च संस्थिते ।
मित्रबन्ध्वोश्च नाशश्च, स्त्रीसौख्यं न चात्मनः ॥ १९ ॥

भाषा—यदि स्थिर लग्न में प्रश्न हो, चर राशि में सूर्य और चर राशि में स्थिर रहे तो मित्र, बन्धुओं का नाश होता है और न स्त्री को सुख, न अपने को सुख होता है ॥ १९ ॥

स्थिरे लग्ने द्विःस्वभावेऽर्के चरे चन्द्रे प्रवर्त्तते ।
क्लेशश्च परितश्चित्ते धनहानिः सुनिश्चितम् ॥ २० ॥

भाषा—यदि स्थिर लग्न में प्रश्न हो, द्विस्वभाव राशि में सूर्य और चर राशि में चन्द्र हो तो सब ओर से मन में क्लेश और निश्चय ही धन की हानि होती है ॥ २० ॥

स्थिरे लग्ने द्विःस्वभावेऽर्के स्थिरे चैव निशापतौ ।
राज्यप्राप्तिः धनप्राप्तिः सर्वसौख्यं जयो भवेत् ॥ २१ ॥

भाषा—यदि स्थिर लग्न में प्रश्न हो और सूर्य द्विस्वभाव राशि में हो तथा चन्द्रमा स्थिर राशि में हो तो, राज्य प्राप्ति या धन प्राप्ति तथा सब प्रकार सुख जय आदि होती है ॥ २१ ॥

स्थिरे लग्ने द्विःस्वभावेऽर्के द्विःस्वभावे निशापतौ ।
संक्षिप्तसमवाप्नोति सिद्धिं सौख्यं तथा शुभम् ॥ २२ ॥

भाषा—यदि स्थिर लग्न में प्रश्न हो और सूर्य तथा चन्द्रमा द्विःस्वभाव राशि में हों तो प्रश्न फल मध्यमश्रेणी का होता है। अर्थात् सिद्धि सौख्य तथा शुभ आंशिकरूप से होता है ॥ २२ ॥

इति स्थिर लग्न फलम् ।

अथ द्विस्वभावलग्नफलम् ।

द्विःस्वभावे स लग्ने द्विःस्वभावेऽर्के चन्द्रयोः ।
भूमिलाभः स्थानलाभः स्वजनैश्च समागमः ॥ २३ ॥

भाषा—यदि प्रश्न द्विस्वभाव लग्न में हो, और सूर्य एवं चन्द्र दोनों द्विस्वभाव राशि में हों तो भूमि लाभ, स्थानलाभ और वन्धुजनों का आगमन होता है ॥ २३ ॥

द्विःस्वभावेषु लग्नेषु द्विदेहेऽर्के चरे शशी ।
लाभयोगे विजानीयात् समस्तं हि सदासुखम् ॥ २४ ॥

भाषा—यदि द्विस्वभाव लग्न में प्रश्न और सूर्य दोनों हों और चन्द्रमा चर लग्न में हो तो, प्रश्नकर्त्ता को लाभ और सब प्रकार का सुख प्राप्त होता है ॥२४॥

द्विःस्वभावस्थ लग्नार्कौ स्थिरे चन्द्रः प्रवर्त्तते ।
हानिः सौख्यं च कल्याणं न च सिद्धि हिं दृश्यते ॥ २५ ॥

भाषा—यदि द्विस्वभाव लग्न और सूर्य दोनों हों और चन्द्रमा स्थिर लग्न में हो तो प्रश्नकर्त्ता की हानि होती है और सुख, कल्याण की सिद्धि नहीं होती है ॥ २५ ॥

द्विःस्वभावे च लग्नं स्यात् स्थितेऽर्के चरचन्द्रमाः ।
पथश्च गमनात् सिद्धि सर्वं सौख्यं न संशयः ॥२६॥

भाषा—यदि प्रश्न द्विस्वभाव लग्न में हो, स्थिर राशि में सूर्य और चर राशि में चन्द्रमा हो तो, गमन करने वाले की यात्रा सफल होती है और निश्चय ही सव प्रकार का सुख मिलता है ॥ २६ ॥

द्विःस्वभावे यदा लग्नं स्थिरे सूर्यश्च चन्द्रमाः ।
सर्वसौख्यंश्च लाभश्च लाभयोगः सदा भवेत् ॥ २७ ॥

भाषा—यदि द्विस्वभाव में प्रश्न लग्न हो और सूर्य एवं चन्द्रमा दोनों स्थिर राशि में हों तो सर्व प्रकार का सुख और सदा लाभ होता है ॥ २७ ॥

द्विःस्वभावेषु लग्नेषु सूर्ये च स्थिर एव च ।
द्विःस्वभावे मृगाङ्के च पुत्रमित्रादुपद्रवः ॥ २८ ॥

भाषा—यदि प्रश्न द्विस्वभाव लग्न में हो, सूर्य स्थिर राशि में हो और चन्द्रमा द्विस्वभाव राशि में हो तो पुत्र और मित्र से उपद्रव होता रहता है ॥ २८ ॥

द्विःस्वभावे च लग्ने स्याच्चरराशौ रविः शशी ।
समस्तमशुभं चैव हानिरुद्विग्नकारणम् ॥ २९ ॥

भाषा—यदि द्विस्वभाव लग्न में प्रश्न हो, और चर राशि में सूर्य तथा चन्द्रमा बैठे हों तो सब प्रकार अशुभ हानि एवं उद्वेग उत्पन्न होता है ॥ २९ ॥

द्विःस्वभावे यदा लग्नं चरे सूर्यः स्थिरे शशी ।
जायते मानवानाञ्च महालाभो महासुखम् ॥ ३० ॥

भाषा—यदि द्विस्वभाव लग्न में प्रश्न हो और चर राशि में सूर्य तथा चन्द्रमा दोनों हों तो प्रश्न करने वाले मनुष्यों को महालाभ और महासुख का फल मिलता है ॥ ३० ॥

द्विःस्वभावे यदा लग्नं चरेऽर्के दिःस्वभे शशी ।
सुतलाभः शुभं शान्तिः विद्यालाभो धनागमम् ॥ ३१ ॥

भाषा—यदि द्विस्वभाव लग्न में प्रश्न हो, चर राशि में सूर्य तथा द्विस्वभाव राशि में चन्द्रमा हो तो सन्तान लाभ, शुभ, शान्ति, विद्यालाभ और धनप्राप्ति का फल प्राप्त होता है ॥ ३१ ॥

इति द्विस्वभावलग्नफलम् ।

अथागमप्रश्नः

नायाति वसु युग्माभ्यां षड् वेदैरागमिष्यति ।
वार्ता शीघ्र समायातो मुनि रामे विशेषतः ॥
वाणरन्ध्रसुधांशुभ्यो शीघ्रमायाति निश्चितम् ॥ ३२ ॥

भाषा—प्रश्न कर्त्ता से किसी अङ्क के ऊपर अँगुली रखने को कहे । यदि वह २ और ८ अङ्क के ऊपर अँगुली रखे तो आनेवाला नहीं आवे । यदि ४ और ६ में अँगुली रखे तो आने वाला आवेगा, यदि ३ और ७ पर अँगुली रखे तो आनेवालो का कुशल वार्ता प्राप्त हो और १, ५, ९ में किसी के ऊपर अंगुली पड़े तो आनेवाला शीघ्र आवेगा ॥ ३२ ॥

१	४	७
२	५	८
३	६	९

अथागमन प्रश्नोत्तर

बुधे चन्द्रे तथा मार्गे, समीपे शुभशुक्रयोः ।
रवौ भौमे तथा दूरे शनौ च परिपीड्यते ॥ ३३ ॥

भाषा—यदि प्रश्न कर्त्ता बुधवार और सोमवार को किसी के आने का प्रश्न करे तो आने वाले को रास्ता में वतलाना चाहिए। गुरवार और शुक्रवार को प्रश्न करे तो आनेवाले को समीप में आया हुआ वतलाना चाहिए। रविवार और मंगलवार को प्रश्न करे तो दूर वतलाना चाहिए, किन्तु शनिवार को प्रश्न करे तो आनेवाले को पीड़ित वताना चाहिए ॥ ३४ ॥

चौरप्रश्नः—

मेषलग्ने द्विजश्चौरो राजन्यश्च वृषे भवेत्।
लग्ने च मिथुने वैश्यः शूद्रः कर्कटके ध्रुवम् ॥ ३४ ॥
अन्त्यजः तस्करः सिंहे कन्यायां च कुलाङ्गना,
पुत्रो भ्राता सखावापि तुलायां तस्करो भवेत् ॥ ३५ ॥
वृश्चिके सेवकश्चौरः चापे चौरः स्त्रियो भवेत्।
मकरे वैश्यश्चौरः स्यात् कुम्भे चौरश्च मूषिकः ॥ ३६ ॥
मीने भूमिगतं प्रोक्तं नान्यथा तस्करो भवेत्।
चौरस्य द्व्यक्षरं नाम मेषलग्ने च सादिकम् ॥ ३७ ॥
चतुर्वर्णात्मकं नाम मकारादि वृषे भवेत्।
मिथुने त्र्यक्षरं नाम ककारादिकमादिशेत् ॥ ३८ ॥
कर्कटे त्र्यक्षरं नाम तकारादिकमादिशेत्।
सिंहे च त्र्यक्षरं नाम मकारादिकमिष्यते ॥ ३९ ॥
कन्यायां द्व्यक्षरं नाम मकारादिविनिर्दिशेत्।
तुलायां त्र्यक्षरं नाम मकारादिकमिष्यते।
ततोमकरपर्यन्तम् सादिकं चतुरक्षरम्।
कुम्भे च त्र्यक्षरं नाम लकारादिकमिष्यते ॥ ४० ॥
मीने त्र्यक्षरं नाम चकारादि विनिर्दिशेत्।
मेषे वृषे दिशेत् पूर्वमाग्नेय्यां मिथुने तथा ॥ ४१ ॥
दक्षिणे कर्कटे ज्ञेयौ नैऋत्यां सिंहलग्नके।
कन्यायां पश्चिमे ज्ञेयः प्रतीच्यां तुलवृश्चिके ॥ ४२ ॥
धने चैव तु वायव्यामुत्तरे मकरे घटे।
मीने ईशानतो ज्ञेयः तस्करो दिशि लक्षणम् ॥ ४३ ॥

भाषा—यदि मेष लग्न में वस्तु गयी हो या प्रश्न किया गया हो तो पूर्व दिशा में वस्तु गई और लेनेवाला जाति का ब्राह्मण है तथा उसका नाम स अक्षर से प्रारम्भ होकर दो अक्षर का है। वृष लग्न में भी वस्तु चोरी जाने की दिशा पूर्व है किन्तु चोर क्षत्रिय जाति का है और उसका नाम म अक्षर से प्रारम्भ होकर चार अक्षर का है। मिथुन लग्न में चोरी गई वस्तु आग्नेय कोण की दिशा में गई, चोर वैश्य जाति का है और क से प्रारम्भ होकर ३ अक्षर का उसका नाम है। सिंह लग्न में चोरी गई है तो नैऋत्य कोण में वह वस्तु गयी है और मुसलमान जाति का वह चोर है तथा न अक्षर से प्रारम्भ होकर ३ अक्षर में उसका नाम है। कन्या लग्न में चोरी की वस्तु पश्चिम दिशा में कुलीनास्त्री के द्वारा गई है तथा उसका नाम म अक्षर से आरंभ होकर २ अक्षर का समझना चाहिए। तुला लग्न में चोरी की वस्तु पश्चिम दिशा में पुत्र भाई या मित्र के द्वारा गई है जिसका नाम म अक्षर से आरंभ होकर तीन अक्षरों का है। वृश्चिक लग्न में चोरी की वस्तु पश्चिम दिशा में नौकर के द्वारा गई है और सकारादि ४ अक्षर का उसका नाम है। धनु लग्न में चोरी गई वस्तु वायुकोण में किसी स्त्री के द्वारा गई है जिसका नाम सकारादि चार अक्षरों का है। मकर लग्न में चोरी की वस्तु उत्तर दिशा में गई है, चोर वैश्य जाति का तथा उसका नाम सकारादि चार अक्षरों का है। कुंभ लग्न में चोरी की वस्तु उत्तर दिशा में गई है जिसको हटाने वाला (चोर) चूहा है। मीन लग्न में चोरी गई वस्तु (प्रश्न लग्न से भी यही फल होगा) ईशान कोण में भूमिगत है, इसका चोर शूद्र वर्ण का तथा वकारादि तीन अक्षरों में उसका नाम समझना चाहिए ॥ ३४–४३ ॥

वृष्टिप्रश्नः—

तत्कालघटिका द्विघ्ना त्रिहृतैकेन सत्वरम् ।
द्वाभ्यां किंचित् विलम्बेन रामैः दूरेति वृष्टिकृत् ॥४४॥

भाषा—प्रश्न कर्ता जिस घटी में प्रश्न करे उस घटी को दूना कर दे और गुणनफल में तीन से भाग दे, भाग देने पर यदि १ शेष बचे तो शीघ्र वृष्टि, २ शेष से विलम्ब से, ३ या शून्य शेष रहने पर दूर स्थान में वृष्टि का फल कहना चाहिए ॥ ४४ ॥

प्रश्नदिशातः फलम्—

दिशाप्रहरसंयुक्तम् तारकावारमिश्रितम् ,
अष्टभिश्च हरेद्भागं शेषं प्रश्नस्य लक्षणम् ।
पंचैके त्वरितासिद्धिः षट्तुर्ये च दिनत्रयम् ,
त्रिसप्तके विलम्बं च द्वौ चाष्टौ न च सिद्धिदौ ॥ ४५ ॥

भाषा—प्रश्न कर्त्ता जिस दिशा में बैठ कर प्रश्न करे उस दिशा की पूर्वादि क्रम से संख्या और प्रहर संख्या तथा प्रश्न के दिन की संख्या और नक्षत्र की संख्या सबको एक जगह जोड़ कर उसमें ८ से भाग देवे, भाग देने पर शेष यदि १ या ५ आवे तो शीघ्र कार्य की सिद्धि, ४ या ६ शेष रहे तो तीन दिन में कार्य की सिद्धि, ३ या ७ शेष रहे तो विलम्ब से कार्य सिद्धि, किन्तु २ या ८ बचे तो कार्य में सिद्धि नहीं होगी ऐसा बतलाना चाहिए ॥ ४५ ॥

नोट—दिन की सख्या रविवार को १ मान कर प्रश्न करने के दिन से गिन लेना चाहिए ।

सन्तानचिन्ता प्रश्नः—

चतुर्गुणा तिथिः सैका मिश्रिता वारयोगकैः,
द्वाभ्यां भागेन यल्लब्धं त्रिघ्नं वेदहृतं च तत् ।
एकशेषे विलम्बेन द्विशेषेनैव सम्भवः ।
अचिरेणैव कालेन त्रिशेषे प्रवदेत् बुधः ॥ ४६ ॥

भाषा—प्रश्नकर्त्ता जिस तिथि को प्रश्न करे उस तिथि को ४ से गुणा कर उसमें एक मिला दे और उसके बाद आयी हुई संख्या में दिन की संख्या और योग की संख्या जोड़ कर चार से भाग देवे, ४ से भाग देने पर यदि शेष १ बचे तो विलम्ब से सन्तान की सम्भावना कहनी चाहिए, २ शेष रहे तो संतान की सम्भावना नहीं है, ३ शेष रहे तो शीघ्र सन्तान की सम्भावना कहनी चाहिए ॥४६॥

अन्य प्रकारः—

वारस्त्रिगुणितः कार्यः तिथिभिश्चैव संयुतः ।
द्वाभ्यां भक्ते च यच्छेषं समे नास्त्यसमे भवेत् ॥ ४७ ॥

भाषा - प्रश्न के दिन की संख्या को ३ से गुणा करके उसमें प्रश्नकाल की तिथि को भी जोड़ देवे और उसमें २ से भाग दे यदि १ शेष बचे तो सन्तान को सम्भावना होगी, किन्तु २ या शून्य बचे तो संतान की सम्भावना नहीं करनी चाहिए ॥ ४७ ॥

पुत्र पुत्री जन्म विचारः—

प्रश्नवर्णाङ्कमात्राङ्कतिथिवारर्क्षं च संयुतम् ।
सप्तभक्तावशेषेण समेस्त्री विषमे पुमान् ॥ ४८ ॥

भाषा—प्रश्नकर्त्ता के प्रश्न के सभी अक्षरों तथा मात्राओं को जोड़कर उस योग में तिथि, दिन और नक्षत्र की संख्याओं को जोड़ देवे तथा योग कल में ७ से

भाग दे, यदि शेष २, ४, ६ हो तो पुत्री और १,३,५,७ शेष आवे तो पुत्रोत्पत्ति की सम्भावना कहनी चाहिए ॥ ४८ ॥

अथ केरल प्रश्नः—

वर्णध्रुवाङ्क कोष्ठम्

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	वर्णः
१२	२१	११	१८	१५	२२	१८	३२	२५	१६	२५	ध्रुवाङ्काः
क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट	वर्णः
१३	११	२१	३०	१०	१५	२१	२३	२६	२६	१०	ध्रुवाङ्काः
ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ	वर्णः
१३	२०	३५	४५	१४	१८	१७	१३	३५	२८	१८	ध्रुवाङ्काः
व	भ	म	य	र	ल	व	श	ष	स	ह	वर्णः
२६	२७	८६	१६	१३	१३	३५	२६	३५	३५	१२	ध्रुवाङ्काः

प्रश्नकर्त्ता से किसी फल या किसी फूल का नाम पूछे। उसके वताए हुये फल या फूल के अक्षरों को ध्रुवाङ्क कोष्ठ के अनुसार देख कर सव को जोड़ देना चाहिए, यही पिण्ड होगा। इस पिण्ड में आगे कहे हुए प्रश्नों का क्षेपक जोड़ कर प्रश्न में वनाए हर से भाग देकर शेष से फल निकाल लेना चाहिए।

लाभालाभ प्रश्नः—

लाभालामे द्विचत्वारि क्षेपः भागः त्रिभिः स्मृतः।
एकशेषे च लाभः स्याद् द्विशेषे स्वल्पलाभकः,
शून्यशेषे तु हानिः स्यात् लाभालाभस्य लक्षणम् ॥ ४९ ॥

भाषा—लाभालाभ प्रश्न का क्षेपक ४२ है और हर संख्या ३ है। अतः इस प्रश्न में प्रश्नकर्त्ता से लिए गये फल या फूल के पिण्ड में ४२ जोड़ कर योग में ३ से भाग देवे भाग देने पर यदि शेष १ आवे तो लाभ शेष २ आवे तो स्वल्पलाभ यदि शून्य शेष आवे तो हानि की सम्भावना होती है ॥ ४९ ॥

जीवन मरण प्रश्नः—

जीवने मरणे क्षेपाश्चत्वारिंशत् प्रकीर्त्तिताः।
अथ भागस्त्रिभिः कार्यः शेषाङ्केन फलं दिशेत्।
एकेन जीवनं वाच्यं कष्टसाध्यं द्वितीयके।
शून्ये तु मरणं प्रोक्तं ज्ञातव्यं सर्वदा बुधैः ॥ ५० ॥

भाषा—जीवन या मरण के ४० क्षेपक हैं और हर ३ है। प्रश्न कर्त्ता के प्रश्न से जो वर्णों के द्वारा पिण्ड आवे उसमें ४० जोड़ कर योग में ३ का भाग

देवे। यदि भाग देने पर १ शेष बचे तो फल जीवित कहे, २ शेष रहे कष्ट साध्य जीवन बतावे और शून्य शेष बचे तो मरण फल बताना चाहिए ॥ ५० ॥

सुखदुःख प्रश्नः—

सुखदुःखे क्षेपकास्तु अष्टरामैः स्मृताः
अत्र भागो लोचनाभ्यामेकशेषं सुखं भवेत्
शून्ये दुःखं विजानीयात् सुखदुःखस्य लक्षणम् ॥ ५१ ॥

भाषा— सुखदुःख प्रश्न का क्षेपक ३८ से है। सुखदुःख के प्रश्न पिण्ड में ३८ जोड़कर दो का भाग देवे यदि शेष १ बने तो सुख और शून्य बचे तो दुःख कहना चाहिए ॥ ५१ ॥

गमनप्रश्नः—

गमने रामरामाश्च क्षेपकाः परिकीर्त्तिताः
त्रिभिर्भागं समाहृत्य एकशेषे गमः स्मृतः
द्वाभ्यां शेषे न गमनं शून्ये हानिः स्मृताः बुधैः ॥ ५२ ॥

भाषा—गमन प्रश्न का क्षेपक ३३ है, प्रश्न कर्त्ता के प्रश्न पिण्ड में ३३ जोड़ कर योग फल में ३ से भाग देवे। भाग देने पर यदि शेष १ बचे तो गमन निश्चय, शेष २ बचे तो गमन नहीं होगा। यदि शून्य बचे तो गमन से हानि होगी ॥ ५२ ॥

जय पराजय प्रश्नः—

जयाजये क्षेपकास्तु चतुस्त्रिंशत् प्रकीर्तिताः।
रामैर्भागं समाहृत्य एकशेषे जयं वदेत्
द्वाभ्यां सन्धिं वदेत् प्राज्ञः शून्यशेषे पराजयः ॥ ५३ ॥

भाषा—जय और पराजय प्रश्न का क्षेपक ३४ है इसे प्रश्न कर्त्ता के प्रश्न पिण्ड में जोड़कर ३ से भाग देवे, भाग देने पर यदि शेष १ आवे तो जय, यदि शेष २ रहे तो सन्धि और शेष यदि शून्य आवे तो पराजय फल होता है ॥ ५३ ॥

वर्षा प्रश्नः—

द्वात्रिंशो वर्षणः प्रश्ने क्षेपकः कथितो बुधैः।
वह्निभिर्विभजेत् धीमान् एकशेषे प्रवर्षणम्
द्वाभ्यान्तु मध्यमावृष्टिः अनावृष्टिः खशेषके ॥ ५४ ॥

भाषा—वर्षा प्रश्न में ३२ क्षेपक हैं इसे प्रश्नकर्त्ता के प्रश्न पिण्ड में जोड़कर

इसे भाग देवे। भाग देने पर यदि शेष रहे तो वर्षा होती है, २ शेष रहे तो मध्यम वृष्टि किन्तु शेष यदि शून्य आवे तो अनावृष्टि कहना चाहिए ॥ ५४ ॥

यात्रा प्रश्नः—

यात्राप्रश्ने क्षेपकस्तु नवराममितः स्मृतः
रामैः भागंसमाहृत्य यात्रास्यादेकशेषके
द्विशेषे मध्यमा यात्रा न यात्रा शून्यशेषके ॥ ५५ ॥

भाषा—यात्रा प्रश्न का क्षेपक ३९ है इसे प्रश्नकर्त्ता के प्रश्न पिण्ड में जोड़कर ३से भाग देवे भाग देने से यदि एक शेष रहे तो शुभ यात्रा, दो शेष रहे तो मध्यमा यात्रा किन्तु शून्य शेष रहने पर यात्रा नहीं कहनी चाहिए ॥ ५५ ॥

गर्भ प्रश्नः—

गर्भप्रश्ने क्षेपकस्तु षड्त्रिंशत्कथितो बुधैः।
त्रिभिर्भागं समाहृत्य गर्भं भूशेषके स्मृतः
सन्देहस्तु द्विशेषे स्यात् शून्येनास्तीतिनिश्चयः ॥ ५६ ॥

भाषा—गर्भ प्रश्न का क्षेपक २६ है। इसमें प्रश्नकर्त्ता के प्रश्न पिण्ड को जोड़कर ३ से भाग देवे यदि एक शेष रहे तो गर्भ है, २ शेष रहे तो गर्भ में सन्देह किन्तु यदि शून्य शेष रहे तो निश्चय ही गर्भ नहीं है, बतलाना चाहिए ॥ ५६ ॥

मुष्टिका प्रश्नोत्तरम् —

प्रश्नाक्षरं द्विगुणित-मेकेन च समन्वितम्
वह्निभिश्च हरेद् भागं शेषं चिन्ता विनिर्दिशेत्।
विषमे जीवचिन्ता स्यात् समे धातु विनिर्दिशेत्
शून्ये मूलं विजानीयात् चिन्ता लक्षणमीदृशम् ॥ ५७ ॥

भाषा— प्रश्नकर्त्ता के प्रश्न के अक्षरों को दूना करके उसमें एक जोड़कर ३ से भाग देवे यदि एक शेष रहे तो जीव चिन्ता, २ शेष रहे तो धातु चिन्ता, किन्तु यदि शेष शून्य आवे तो मूल चिन्ता बतानी चाहिए ॥ ५७ ॥

प्रश्ने धातु-मूल-जीव चिन्ता विचारः —

शिरस्पर्शे जीवचिन्ता पादस्पर्शे तु मूलकम्,
नाभिस्पर्शे धातुचिन्ता विज्ञेया सर्वदा बुधैः।
स्पर्शे वक्त्रललाटे च जीवचिन्ता शुभप्रदाः,
हृदयोदरकटिस्पर्शे धातुचिन्ता तु मध्यमा।

गुह्योरुपृष्ठभागे च प्रथमं मूलचिन्तनम् ।
जानुजंघपदे नूनं धातुचिन्ता निरूपणम् ॥ ५८ ॥

भाषा—प्रश्नकर्त्ता प्रश्न करते समय यदि शिर, मुख, ललाट स्पर्श करके प्रश्न करे तो जीव चिन्ता सम्बन्धि प्रश्न बतलावे, यदि हृदय, पेट, कटि, नाभि का स्पर्श करके प्रश्न करे तो धातु चिन्ता सम्बन्धि प्रश्न और यदि पाँव, गुह्य, जानु, जंघा, जंघा से ऊपर का भाग स्पर्श करके प्रश्न करे तो मूल पदार्थ सम्बन्धि प्रश्न कहना चाहिए ॥ ५८ ॥

जीवादि प्रश्ने दिशा-परीक्षा—

पूर्वस्यां धातुचिन्ता स्याज्जीवं दक्षिणतस्तथा ।
पश्चिमे चोत्तरे चैव मूलचिन्ता वदेद्बुधः ॥ ५४ ॥

भाषा—प्रश्नकर्त्ता पूर्व दिशा की ओर मुँह करके प्रश्न करे तो धातु सम्बन्धि प्रश्न, दक्षिण की ओर मुँह करके प्रश्न करे तो जीव सम्बन्धि प्रश्न, और यदि पश्चिम या उत्तर की ओर मुँह करके प्रश्न करे तो मूल सम्बन्धि प्रश्न बतलाना चाहिए ॥ ५९ ॥

अथ मुष्टिकाप्रश्ने वर्णकथनम्—

तिथिप्रहरसंयुक्ता तारकावारमिश्रिता ।
नवभिश्च हरेद् भागं शेषाङ्के वर्णमादिशेत् ॥ ६० ॥
ताम्रो, मुक्तासदृशः श्वेतमिश्रोऽथरक्तकः ।
दूर्वासदृशो वर्णः सुवर्ण वर्णोऽथ मुक्ताभः ॥
श्यामोवर्णोज्ञेयोह्यारक्तो नीलमिश्रितः श्वेतः ।
नीलमिश्रोऽथरक्तो वर्णो ज्ञात्वा वदेद्धीमान् ॥

भाषा—प्रश्नकालिक तिथि प्रहर नक्षत्र और वार संख्या का योग कर ९ का भाग देने से मुष्टिगत पदार्थ का वर्ण ज्ञात होता है । एक शेष बचे तो ताँवा के समान, २ शेष रहे तो मोती के समान, ३ शेष रहे तो सफेद और लाल मिला हुआ, ४ शेष रहे तो दूब के समान, ५ शेष रहे तो सोने के समान, ६ शेष रहे तो मुक्ता के समान, ७ शेष रहे तो श्याम वर्ण, ८ शेष रहे तो लाल, नीला और सफेद रंग तथा ९ शेष रहे तो नील और रक्त मिला हुआ वर्ण बतलाना चाहिए ॥ ६० ॥

अथ तात्कालिकग्रहात् मुष्टिकाप्रश्नोत्तरम्—

प्रश्नाक्षरं षट्गुणितमष्टभिश्च विमिश्रितम् ,
नवभिश्च हरेद् भागं शेषं तात्कालिको ग्रहः
ग्रहोपरि वदेत् प्रश्नं सम्यगर्कादि लक्षणम् ,
चन्द्रे शुक्रे तथा जीवे जीवचिन्ता विनिर्दिशेत्
भानौबुधे तथा केतौ धातुचिन्तां वदेद् बुधः,
कुजे मन्दे च राहौ च मूलचिन्ता मनीषिभिः ॥ ६१ ॥

भाषा—प्रश्नकर्त्ता के प्रश्नाक्षर को ६ से गुणाकर और उसमें ८ जोड़कर ९ से भाग देवे शेष तात्कालिक ग्रह होता है, जिसे सूर्य आदि क्रम से जानना चाहिए। चन्द्र, गुरु-शुक्र आने पर जीव चिन्ता, सूर्य, बुध, केतु आने पर धातु चिन्ता, तथा मंगल, शनि और राहु ग्रह होने पर मूल चिन्ता समझनी चाहिए ॥ ६१ ॥

ग्रहाणां वर्णानुसारं वस्तु वर्णकथनम्—

रक्तश्यामो भवेत् सूर्यः शशी श्वेतः प्रकीर्तितः,
रक्तश्वेतः कुजो ज्ञेयः दूर्वा श्यामो बुधः स्मृतः।
श्वेतपीतोगुरुर्ज्ञेयः श्यामवर्णो भृगुस्मृतः।
कृष्णः शनैश्चरो ज्ञेयः वियद्वर्णः विधुन्तुदः
केतुः कर्पूरवर्णः स्याद्ग्रहवर्णाः स्मृताबुधैः
धातोर्विनिश्चये जाते ग्रहधातुं वदेद्बुधः ॥ ६२ ॥

भाषा– सूर्य ग्रह से लाल और श्याम मिश्रित वर्ण जानना चाहिए। चन्द्रमा से सफेद वर्ण मंगल से लाल, बुध से पूर्व के समान श्याम वर्ण, गुरु से श्वेत पीत मिश्रित, शुक्र से श्यामवर्ण, शनि से कालावर्ण, राहु से आकाशवर्ण, केतु से कर्पूर वर्ण जानना चाहिए और धातु का निश्चय होने से जिस ग्रह का जो धातु है वह कहना चाहिए ॥ ६२ ॥

अथ ग्रहाणां धातुः –

चन्द्रे शुक्रे भवेद् रौप्यं, बुधे स्वर्णमुदाहृतम् ,
गुरौरत्नयुतं हेम, सूर्ये मौक्तिकमेव च
भौमेताम्रं शनौ लौहं राहौ नीलादयः स्मृतः,
केतौ कर्पूरधातुश्च स्वबुद्धया धातुनिर्णयः ॥ ६३ ॥

भाषा—चन्द्रमा और शुक्र का चान्दी धातु है, बुध का सोना, वृहस्पति का रत्न और सोना, सूर्य का मोती, मंगल का ताँवा, शनि का लोहा और राहु का नीला, केतु का कपूर है ॥ ६३ ॥

ग्रहवशात् जीवादि ज्ञानम्—

द्विपदौ भार्गवगुरू, भूमिजार्कौ चतुष्पदौ,
पक्षिणौ बुधसौरी च, चन्द्रराहौ सरीसृपौ ॥ ६४ ॥

भाषा—गुरु और शुक्र ग्रह आने से द्विपद का प्रश्न समझना चाहिए, सूर्य और मंगल ग्रह रहने से चतुष्पद सम्बन्धि प्रश्न कहना चाहिए, बुध और शनि ग्रह के आने से पक्षी सम्बन्धि प्रश्न कहना चाहिए, चन्द्रमा और राहु ग्रह में सर्प विच्छू आदि सम्बन्धि प्रश्न कहना चाहिए ॥ ६४ ॥

अथ मानसिक प्रश्नोत्तरं पूर्वानीत ग्रहात्—

आदित्ये नैव सिद्धिः स्यात् सोमे सिद्धिः प्रजायते,
भौमे तु मरणं ज्ञेयं, गुरुशुक्रबुधाः शुभाः ।
शनैश्चरे नास्ति सिद्धिः राहुकेत्वोस्तथैव च,
आदित्ये मासमेकन्तु सोमे तु विंशतिर्दिनैः ।
भौमे ऋतुभवं प्रोक्तं, बुधे सप्तदिनैः फलम् ,
एकोनविंशतिर्जीवे भृगौ विंशति वासरैः
शनैश्चरे चैकवर्षैः राहुकेत्वोरपि स्मृतम् ॥ ६५ ॥

भाषा—पहले वताई रीति से प्रश्न समय में तात्कालिक ग्रहों को निकालकर कार्यसिद्धि का फल कहना चाहिए। इस तरह सूर्य आवे तो फल १ महीना के अन्दर प्राप्त हो जाता है। चन्द्र के आने पर २० दिनों में कार्यसिद्धि हो जाती है। मंगल ग्रह हो तो ६ महीने में (मृत्यु) अनिष्ट फल देता है, बुध ग्रह में ७ दिनों में फल कहना, वृहस्पति में १९ दिन के अन्दर, शुक्र में २० दिनों में अशुभ फल होता है। शनि और राहु केतु ग्रह-रहने पर कार्य की सिद्धि नहीं होती इनका एक वर्ष में फल होता है ॥ ६५ ॥

अथ मूलम्—

चन्द्रे शुक्रे गुल्मवल्ली लता कन्दो बुधे तथा ।
पत्रं गुरौ फलं सूर्ये मूलं चैव कुजे स्मृतम् ॥
राहौ मूलं विजानीयात् केतौ पुष्पं विनिर्दिशेत् ॥ ६६ ॥

भाषा—चन्द्रमा और शुक्र में गुल्म वल्ली बतलावे बुध में लता और कन्द, बृहस्पति का पत्ता, सूर्य का फल, मंगल का मूल (जड़) और राहु का भी मूल, केतु का पुष्प कहना चाहिए ॥ ६६ ॥

लग्नवशात् कार्यफलम्—

अजतुलधनुलग्ने कार्यसिद्धिर्विलम्बे ।
मृगकुलिर-अलौ चेत् कार्यध्वंसो भवेद्धि ।
हरिवृषघटलग्ने कार्यसिद्धिर्नराणां
युवतिमिथुनमीने कार्यसिद्धिश्च शीघ्रम् ॥ ६७ ॥

भाषा—मेष, तुला, धन लग्न में प्रश्न हो तो विलंब से कार्य सिद्धि हो, मकर, कर्क, वृश्चिक लग्न में प्रश्न हो तो कार्य सिद्धि न हो, सिंह, वृष, कुम्भ लग्न में कार्य सिद्धि होवे तथा कन्या मिथुन मीन लग्न में प्रश्न हो तो शीघ्र कार्य सिद्धि बतानी चाहिए ॥ ६७ ॥

तात्कालिकग्रहात् नष्टवस्तुदिग् ज्ञानम्—

चन्द्रभानौ वदेत् प्राच्यां, जीवशुक्रौ च पश्चिमे ।
उत्तरे बुधभौमौ च शनौ राहौ च दक्षिणे ॥ ६८ ॥

भाषा—पूर्वोक्त रीति में तात्कालिक निकाल कर फल बतलावे । यदि चन्द्रमा और सूर्य ग्रह आवे तो नष्ट वस्तु पूर्व दिशा में गयी है, गुरु और शुक्र आवे तो पश्चिम दिशा में, मंगल और बुध आवे तो उत्तर दिशा में शनि या राहु के आने पर दक्षिण दिशा में नष्ट वस्तु गई है, यह बतलानी चाहिए ॥ ६८ ॥

अथ वर्गोपरि वर्णज्ञानम्—

अवर्गे ब्राह्मणो ज्ञेयः कवर्गे क्षत्रियः स्मृतः ।
वैश्याश्चवर्गे विज्ञेयाः टवर्गे शूद्रजातयः ।
अन्त्यजास्तवर्गे तु पवर्गे तद्वदेवहि,
शूद्रा यवर्गे विज्ञेयाः शवर्गे वैश्य एवहि ॥ ६९ ॥

भाषा—यदि प्रश्नकर्ता का प्रश्न अवर्ग के अक्षरों के अन्दर हो तो चोर ब्राह्मणजाति का होगा, क वर्ग में प्रश्न है तो चोर क्षत्रिय जाति का अवर्ग के प्रश्न है तो चोर वैश्य जाति का, टवर्ग में शूद्रजाति का, तवर्ग में अन्त्यज जाति का और पवर्ग में भी अन्त्यज जाति का, यवर्ग में प्रश्न हो तो शूद्र जाति का और शवर्ग में प्रश्न हो तो वैश्य जाति का चोर समझना चाहिए ॥ ६९ ॥

वर्गानुसारेण स्त्रीपुरुषनपुंसकज्ञानम्—

स्त्रीचिन्तातु अवर्गे स्यात् कवर्गे पुरुषोत्तमः ।
नपुंसकश्चवर्गेस्यात टवर्गे तद्वदेव हि ।
तवर्गे पुरुषो ज्ञेयः स्त्री पवर्गे स्मृताबुधैः ।
क्लीबं यवर्गे विज्ञेयं शवर्गे तद्वदेवहि ॥ ७० ॥

भाषा—यदि प्रश्न का प्रश्नाक्षर अवर्ग तथा पवर्ग के अक्षरों के अन्दर हो तो चोरी करने वाली स्त्री जाति की है । क वर्ग और त वर्ग के अक्षरों के अन्दर प्रश्न है तो चोर पुरुष जातिका है, च वर्ग, ट वर्ग, य वर्ग में प्रश्न हो तो चोर नपुंसक (हिजड़ा) है ।। ७० ॥

जन्मांग ग्रहवशात् स्त्री पुरुषज्ञानम् —

रविराहुकुजाङ्केषु लग्नांकं च विमिश्रयेत् ।
त्रिभिस्तु हरेद्भागं खैकेशेषे कन्यकायाः द्वये शेषे तदा पुमान् ॥७१॥

भाषा—किसी व्यक्ति के जन्माङ्ग में रवि, राहु, और मंगल जिन भावों में हों उन भावों के अंकों को एक में जोड़ देवे और फिर इसमें लग्न के अंक को भी जोड़ देवे । पूर्ण योग में तीन का भाग दे यदि शून्य या एक शेष हो तो कन्या की कुण्डली और दो शेष रहे तो पुरुष की कुण्डली समझनी चाहिए ॥ ७१ ॥

जन्मपत्र शोधन प्रकारः—

चन्द्रलग्नाधिपो यत्र, तत् त्रिकोणमथापि वा ।
तत् सप्तमं त्रिकोणं वा जन्मलग्नमुदीरयेत् ॥ ७२ ॥

इति श्री प्रश्नचण्डेश्वरे प्रकीर्णकाध्यायः

भाषा—चन्द्र लग्न का स्वामी जन्माङ्ग में जहाँ हो उस स्थान से ५वें या ९वें जन्म लग्न होना चाहिए । चन्द्र लग्न के स्वामी के भाव से ७वें या ५वें या ९वें जन्म लग्न अवश्य होना चाहिए ॥ ७२ ॥

रामकृष्ण कृतिः टीकालङ्कृता रामजन्मना ।
रामजन्मदिने पूर्णा षडगुणव्योमलोचने ॥
श्री रामनवमी सं० २०३६